ओ३म्

आर्य वन्दना

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द अमृत वचन

पण्डित श्री लेख राम जी के हृदय में महाराज जी के दर्शनों की तीव्र लालसा उत्पन्न हो आई। वे कुछ काल के लिए अपने सारे काम काज छोड़कर, पंजाब से अजमेर जा पहुंचे। ज्येष्ठ बदी ४ सं० १९३८ प्रातःकाल श्री सेवा में उपस्थित हुए। उन्होंने भक्तिभाव से नम्रीभूत होकर, श्री चरणों में विनीत नमस्ते निवेदन किया। उनके प्रेम रस से रसीले, विमल लोचनों, मधुर मुखमण्डल को, शोभाशाली विशान ललाट को और पतित पावनी परम पवित्र आकृति का अवलोकन कर, मोहियाल वंश के सुवीर सुपूत को अतिशय प्रसन्नता उपलब्ध हुई। वे मार्ग की सारी थकान तत्काल भूल गये। वे अतृप्त लोचनों से, अति तृष्णा के साथ, स्वामीजी के सुन्दर स्वरूप को देखने लगे।

पण्डित जी ने **बद्धान्जलि** होकर पूछा कि भगवन्! आकाश और ब्रह्म दोनों पदार्थ व्यापक हैं। दोनों एक स्थान में एकत्र होकर क्यों नहीं रह सकते हैं?

महाराज ने एक पास पड़ा पत्थर उठाकर पूछा कि इसमें अग्नि व्यापक है वा नहीं? उन्होंने कहा कि हाँ अवश्यमेव है फिर उन्होंने उसी पाषाणखंड में वायु, जल, मृतिका, आकाश और परमात्मा की व्यापकता पूछी। पण्डितजी ने सबकी व्यापकता स्वीकार कर ली। तब स्वामीजी ने कहा, "भद्र! आपने समझ लिया कि एक पत्थर में सब पदार्थ व्याप्त हो रहे हैं। इस व्यावकता का सरल सिद्धांत यह है जो पदार्थ जिससे सूक्ष्म होता है वह उसमें व्याप्त हो सकता है। परमात्मादेव परम सूक्ष्म है। इसलिए ये सब पदार्थों में परिपूर्ण हो रहे हैं।"

—दयानन्द प्रकाश

कामना

उस वेद के उपदेश का, सर्वत्र ही प्रस्ताव हो,
सौहार्द्र और मतैक्य हो, अविरुद्ध मन का भाव हो।
सब इष्ट फल पावें परस्पर प्रेम रखकर सर्वदा,
निज यज्ञ भाव समानता से देव लेते हैं यथा॥

***

धूप उगे, फसलें फूलें, अक्षय सुख का भण्डार हो,
जलें निरंतर दीप, नित्य ही दीपों का त्यौहार हो।

—गुप्त जी

—माथुर जी

यह अंक आर्य समाज मण्डी के सहयोग से प्रकाशित किया गया तथा आगामी अंक डी. ए. वी., हमीरपुर के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ६८वां विक्रमी सम्वत् २०७२ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११६ अक्तूबर २०१५

ईश्वर की न्याय-व्यवस्था

*खुशहालचन्द्र आर्य

ईश्वर सब जीवों का निर्माता अथवा पिता है, इसलिए सब जीव ईश्वर के पुत्र हैं। पिता अपने किसी पुत्र से भी अन्याय व पक्षपात नहीं करेगा। उसकी न्याय–व्यवस्था सब जीवों के लिए समान है। वह न किसी को अधिक देता है और किसी को कम। मनुष्य को यह निश्चित समझ लेना चाहिए कि जैसा कर्म करूंगा उसका फल ईश्वर वैसा ही देगा। ईश्वर सर्वव्यापक है, सर्वशक्तिमान है और सर्वज्ञ है। इसीलिए उसकी नजर से कोई नहीं बच सकता। यानी जो जैसा करेगा, ईश्वर अपनी न्याय व्यवस्था से वैसा ही फल निश्चित ही देगा। मनुष्य को भी ईश्वर की न्याय–व्यवस्था से वैसा ही फल निश्चित ही देगा। मनुष्य को भी ईश्वर की न्याय–व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिए। जब हमें पूर्ण विश्वास हो जायेगा कि यदि मैं कोई बुरा काम करूँगा तो ईश्वर उसका फल दुःख के रूप में देगा ही, तो हम बुरा काम करने से डरेंगे। यदि हमको ईश्वर की न्याय–व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास होता है तो हमें दुःख सहने की शक्ति भी मिलती है, कारण हम यह सोचेंगे कि यह दुख जो मुझे मिल रहा है। यह मेरे किसी किये हुए बुरे कर्मों का ही फल है। ईश्वर मेरे ऊपर कोई अन्याय नहीं कर रहा है, जब ईश्वर के घर में अन्याय करना है ही नहीं तो वह मुझ पर अन्याय क्यों करेगा ?मुझे बिना बुरे कर्म किये दुःख क्यों देगा ?जब मुझे दुःख दिया है तो मैंने कभी बुरा काम किया होगा, तो उसके परिणाम स्वरूप मुझे संतोष के साथ दुःख सहना चाहिए और आगे के लिए मैं अच्छे काम करूँ ताकि मुझे दुःख न मिले।

अब प्रश्न उठता है कि अच्छे और बुरे कर्म कौन–कौन से हैं। इसका उत्तर यही है कि ईश्वर जितने भी काम करता है वह बिना स्वार्थ के जीव के हित व कल्याण के लिए ही करता है। सभी मनुष्य ईश्वर की संतान हैं। इसलिए उसे भी अपने पिता के समान ही काम करने चाहिए। जिन कामों से दूसरों का हित व प्रसन्नता प्राप्त होती हो, वे सभी काम अच्छे हैं जैसे दया, करुणा, परोपकार, स्नेह, प्रेम, सच्चाई, ईमानदारी, निष्पक्षता आदि। ये सब अच्छे कर्म हैं। इनसे दूसरों का भला होता है और उनकी आत्मा में प्रसन्नता होती है। महात्मा व्यास के शब्दों में ''आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'' जो काम अपनी आत्मा को पसन्द हो, वही काम दूसरों से भी करें। महात्मा तुलसीदास के शब्दों में ''परहित सरिस धर्म नहीं भाई, पर–पीड़ा सम नहीं अधमाई।'' गीता के शब्दों में'' अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतकर्म शुभाशुभम्'' किये हुए कर्मों का फल अवश्य मिलता है। तो यही समझकर हमें अच्छे कर्म करने चाहिए ताकि हमें दुःख न मिले। इसके विपरीत द्वेष, ईर्ष्या, छल, कपट, पक्षपात, हिंसा आदि बुरे कर्म हैं। इनसे दूसरों को कष्ट होता हैं। इनसे दूसरों को कष्ट होता है। इसलिए ये कर्म न करें।

मुख्य संरक्षक	: रोशन लाल बहल, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मोबाइल : 94180–71247
परामर्शदाता	: 1. रत्न लाल वैद्य, आर्य समाज मण्डी, हि. प्र. मोबाइल : 94184–60332 2. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मोबाइल : 94591–05378
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मोबाइल : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी), जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94181–54988
प्रबन्ध- सम्पादक	: माया राम, गांव चुरढ़, सुन्दरनगर मोबाइल : 94184–71530
सह–सम्पादक	: 1. राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला 2. मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अस्थाड़ा बाजार, कुल्लू मोबाइल : 94599–92215
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.) 175019
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, खरीहड़ी (सुन्दरनगर) से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

आज देश, प्रदेश, विश्व महान् भयानक स्थितियों से गुजर रहा है। आज मानव–मानव का बैरी बनकर दूसरों के आंसू पोंछने के स्थान पर उनके निवाले तक को निगलने में कोई कसर नहीं छोड़ता। आज भारत धरा से मानवता का सूर्य अस्त होता हुआ व दानवता का राक्षस अपने पाँव फैलाता हुआ यत्र–तत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। आज मानव–मानव का सबसे बड़ा बैरी है। वह नहीं चाहता कि विश्व में शांति भ्रातृभाव का साम्राज्य हो वह तो शान्ति के स्थान पर अशांति, सुख के स्थान पर दुःख और दुःखों को महत्व देता है। आज विश्व में स्वार्थ का साम्राज्य चारों ओर छाया है कवि ने इस सबंध में अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा है।

जब से स्वार्थ घुसा प्राणों में हिंसा नस–नस में है छाई। आज भाई के खून का प्यासा है दिखाई देता भाई।

इस पद्यांश में कवि महोदय ने तार्किक शाब्दिक, और मर्मस्पर्शी शब्दों में सही उड़ान दी है। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए मनुष्य बड़े से बड़ा पाप कर बैठता है। व सुखानुभूति करता रहता है। उसके मन व मस्तिष्क में यह विचार अंत समय कौंधने लगता है कि मेरा अर्जित धन यहीं का यहीं धरा रह रहा है। मेरे पिता, परपिता कोई भी इस धन को अपने साथ नहीं ले गये। इसलिए अपने मन व मस्तिष्क को प्रभु चरणों में समर्पित कर देना चाहिए। दीन–दुखियों दलितों, असहायों के आंसुओं को यथा शक्ति पोंछते रहना चाहिए। उसमें ही परम शांति छिपी है। ईश्वर के सम्बंध में किसी कवि ने उचित कहा है।

मैं ढूंढता तुझे पूछता था जब कुज व वन, मैं खोजता तुझे तब था दीन के सदन में, मैं आह बन किसी की तुझको पुकारता था, तू था मुझको बुलाता संगीत में भजन में।

आज का युग भौतिकवाद की जकड़ में इतना जकड़ चुका है कि वह ठीक प्रकार से अपने विचारों की अभिव्यक्ति नहीं दे सकता देश स्वतंत्र हुआ है लेकिन इस स्वतंत्रता में भी हम दलित असहाय के आंसू पोंछने में असमर्थ रहते हैं। हमें केवल मात्र अपने नाम व काम तक ही प्रसन्नता होती है। प्राचीनकाल में ऋषि मुनियों ने मनुष्य का नामक गुणों के आधार पर किया जाता था। गुण कर्म स्वभाव देखकर ही उसके आगामी भविष्य का मार्ग प्रशस्त होता था। महाभारत के उपरान्त देश में अज्ञानता के बादल छाए रहे। बालकों का नामकरण महीनों, वारों नदियों पर किया जाता रहा जो अत्यन्त घटिया प्रवृत्ति हैं। कोई भी माँ अपनी बेटी का नाम ताड़का, मंथरा कैकेयी आदि नहीं रखना चाहती क्योंकि इनमें देवत्व के गुणों का सर्वथा अभाव था, आसुरी प्रवृत्ति ही उनमें शासन करती थी। मैं स्वयं एक ब्राह्मण परिवार में पैदा हुआ। मेरे माता–पिता ने मेरा नाम कृष्ण लेकिन महाभारत के उस कृष्ण की उपमा कलियुग के इस कृष्ण से नही की जा सकती। हमने ये सोचा कि हमें माता–पिता की बात को चरितार्थ करने के लिए आजीवन अपने घर में गऊओं को तो पाला जा सकता है। जिसका शुभारम्भ १९७५ से किया था, आज तक बदस्तूर चल रहा है। उस सम्बंध में मेरी पत्नी महेन्द्री आर्य का सहयोग सराहनीय है। इसे गऊ अपना मान व सम्मान है। एक बार जब हम मण्डी के साथियों के साथ टंकारा यात्रा पर गए थे। घर से कुशल क्षेम जानने के लिए दूरभाष द्वारा संदेश आया। उसमें मेरी पत्नी ने कुशल क्षेम के साथ यह पूछा कि गउओं को घास इत्यादि डाल दिया है। जब इसकी ओर से हां में संदेश आया, तो उन्हें संतोष हुआ। उस वक्त मण्डी के प्रधान रोशनलाल बहल, जयलाल मल्होत्रा आदि साथ थे। उन्होंने हंसते हुए कहा कि देखो आर्य जी आपकी श्रीमती को द्वारिका में भी अपनी गऊओं की याद आ जा रही है। मुझे गोधन के सेवा करते हुए कविवर रसखान का सुयश सहसा आंखों के सामने आ जाता है। रसखान ने ठीक ही कहा है–

बालक कटुरिया कांवरिया पर राजतिंहु डारू।

अर्थात श्री कृष्ण के जंगल में गऊओं के चराने के लिए हाथ में पकड़ी लाठी व कंवल पर मैं तीनों लोक न्योछावर करता हूँ। कवि मर्मस्पर्शी बात सुनकर आधुनिक कवि हरीशचनद्र भारतेन्दू ने कहा है।

अरे इन मुसलमानन भैय्यन पर कोटि हिन्दून वारू। आर्य समाज और महर्षि दयानन्द की मान्यता रही है कि बालक का नाम गुण कर्म स्वभाव के आधार पर ही रखा जाना चाहिए। हमारे समाज में पहले से चली आ रही परिपाटी है हम बारहों मासों नदियों पर्वतों के नाम पर बच्चों के नाम रख देते हैं जो मर्मस्पर्शी नहीं हैं। जैसे स्वारू, मंगलू आदि नाम मर्म स्पर्शी नहीं है ऐसे ही माघु फागणू चैत्रू आदि नाम भी मन को नहीं झकझोरते। ऋषि दयानन्द के अनुसार चाहे बालक हो अथवा बालिका उसका नाम गुणवाचक ही होना चाहिए। कोई भी माता–पिता अपने पुत्र का नाम रावण, मेघनाथ कुम्भकरण, कंस आदि नहीं रखता। वहीं बालिकाओं के नाम माता–पिता कैकयी, मंथरा, ताड़का स्वरूप नक्खा आदि नहीं रखते वे इसके स्थान पर सीता, सावित्री, मन्दोदरी और तारा आदि ही श्रेष्ठ समझते हैं। हमारे ग्रंथों में जब घर के बाहर दरवाजे पर कल्याणार्थ पण्डितों द्वारा पत्र लटकाये जाते हैं तो उनमें लिखा जाता है अहल्या, तारा, मंदोदरी, सीता असतत एतत पंच कन्यानि गृहे रक्षतु सर्वदा। घर की शोभा बालक और बालिकाओं के अच्छे नामकरण में समाहित

है। महाभारत के कर्ण ने यद्यपि दुष्टों का साथ दिया लेकिन उनकी दानवीरता और शौर्यता सबके लिए प्रेरणाग्राही है। यही कारण है कि हम बड़े गौरव के साथ बच्चों का नाम रखते है और दूसरी ओर जो व्यक्ति संस्था के लिए दान करता है हम उसे दानवीर करण कह देते है जो महाभारत के उस कर्ण की शूरता वीरता और गंभीरता को दर्शाती है। आर्य समाज के प्रर्वतक देव दयानन्द ने गुणवाचक नाम को ही प्राथमिकता दी है। मनुष्य को यत्र तत्र सर्वत्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान करते रहना चाहिए। मानव शरीर का वर्णन करते हुए कविवर नन्द लाल ने कहा है :–

आत्मा का रथ कैसा सुन्दर बनाया है, मन बुद्धि इन्द्रियों से इसको सजाया है, अष्ट चक्र नव द्वारा, नमस्कार, नमस्कार।

अन्त में मुझे यही कहना है कि मानव जीवन की सार्थकता अच्छी प्रकार जीने में है इसे छोटे–छोटे भूचालों और दुर्घटनाओं में तोड़ने और मरोड़ने में नहीं है। जीवन वही सार्थक और धन्य है जो समाज के उत्थान में काम करता है और जनमानस के आंसू पौंछने की क्षमता रखता है। कवि ने ठीक ही कहा है :–

करना है जो काम उसी में चित लगा दें। आत्मा पर विश्वास करो संदेह भगा दो। पूर्ण तुम्हारा मनोरथ अगर अभी न होगा तो बस अभी, नहीं तो कभी न होगा।

–कृष्ण चन्द आर्य

२१ वां वार्षिक उत्सव

महर्षि दयानन्द मार्ग आर्य समाज खरीहड़ी का २१वां वार्षिक उत्सव दिनांक १६ सितम्बर से २१ सितम्बर २०१५ तक बड़ी धूमधाम और हर्षोल्लास से मनाया गया। २० सितम्बर को प्रातः १० बजे से दोपहर एक बजे तक ठाकुर सोहन लाल मुख्य संसदीय सचिव पंचायती राज एवं विधायक सुन्दरनगर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। बैठक में सर्वप्रथम मुख्यातिथि महोदय को फूल माला पहनाकर शाल, टोपी भेंट सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के शुभ होते ही मुख्यातिथि ठाकुर सोहन लाल द्वारा टोपी पहनाकर सर्वश्री एम.सी.चौहान, डा. अमरनाथ शर्मा, मित्रदेव वर्मा, रंजीत सिंह, जय राम, चन्द्रमणि वर्मा, मंगतराम चौधरी, दयालू राम शास्त्री, श्री वीरी सिंह भजनोपदेशक, तिलक राज एवं अन्य सदस्यों को सम्मानित किया गया। श्री हेमन्त शर्मा ओर श्री निक्कू राम को टोपी पहनाकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मुख्य संसदीय सचिव ठाकुर सोहन लाल ने अपने विचारों की अमृतवर्षा करते हुए कहा कि आर्य समाज ने छुआछुत को दूर करने के लिए तथा मानवता की स्थापना हेतु विशेष योगदान दिया है। हम ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के ऋणी रहेंगे। स्त्री शिक्षा के प्रचार–प्रसार को महत्व दिया। सभी डी.ए.वी. स्कूलों में सबसे पहले स्त्री शिक्षा पर आर्य समाज के मूर्धन्य नेताओं का विशेष योगदान रहा। ठाकुर जी द्वारा रीसू देवी सुपुत्री श्री भीम चन्द वात्सयान को ११००/– की राशि आर्य समाज द्वारा सौंपी गई। श्री अरूण कुमार एवं कुश गौतम को भी फनियर सांप को पकड़ने एवं जंगल में छोड़ने के लिए २००/– रुपये की राशि मुख्य अतिथि द्वारा दी गई। इस अवसर पर आर्य वन्दना के सम्पादक कृष्ण चन्द आर्य ने मुख्यातिथि महोदय एवं उनके साथियों के समारोह में पधारने पर आभार व्यक्त किया। अन्त में शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सभी पधारे हुए व्यक्तियों ने ऋषि लंगर में प्रेम पूर्वक भोजन ग्रहण किया।

–प्रधान, आर्य समाज (खरीहड़ी) सुन्दरनगर

मातृ देवो भवः

♦कृष्ण चन्द आर्य, सम्पादक

आजकल श्राद्ध चले हैं, पौराणिक मान्यताओं के अनुसार मरे हुए पितर इन दिनों सूक्ष्म शरीर में, अपने प्राचीन घरों में पहुँचते हैं। लोग घरों में नाना पकवान बनाकर उनके नाम पर इस आशा से खिलाते है कि यह सामग्री उन पूर्वजों को जो सर्वदा के लिए छोड़ गए हैं।

वेदों के पुरोधा महान जनना यक समाज सुधारक वेदों के ज्ञाता ऋषिवर दयानन्द का मानना है कि मनुष्य का शरीर प्राप्त होने के बाद अपने कार्यों अनुसार नया जीवन प्राप्त करते हैं। स्वामी जी के अनुसार जीवित माता–पिता का सम्मान करना ही सच्चा श्राद्ध है। खिला–पिला कर उन्हें तृप्त करना पितृ तर्पण है। मरने के बाद जब आत्मा नया शरीर धारण कर लेती है तो उनका आना कल्पना से परे है। हमारे ग्राम में स्व. मास्टर रामशरण गुलेरिया जी कहते थे।

जीते बाप से दंगम दंगा
मरे बाप को पहुंचावे गंगा

जीते बाप से लातमलात मरे बाप को दूध व भात।

उन पूर्वजों को खिला पिलाकर उनकी तृप्ति करना पितृ तर्पण है। हमें इस प्रकार श्रद्धायुक्त होकर जीवित माता–पिता की सेवा करनी चाहिए। वही सच्चा श्राद्ध है। हमें ऋषि मुनियों की इन बातों को मानना चाहिए। जीवनकाल में ही माता–पिता व गुरूओं की सेवा करके आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए।

वेदों के अनुसार : चत्वारिशत तस्यो वर्क्ते आर्युविद्या यशो बलम्।

अर्थात् जो पूर्वजों की सेवा करता व आशीर्वाद लेता है उसकी आयु, विद्या, यश व बल बढ़ता है। वह कि बसंत ऋतुओं का अपने जीवन काल को व्यतीत करता है। वह दूसरों के जीवन में भी हरियाली लाता है। ऐसी विभुतियों के सिर पर हाथ बना रहता है। ओम् नाम के आशीर्वाद से जीवन को सुन्दर, सरल सारगार्भित बनाते रहते हैं।

हनुमान आदि बन्दर नहीं थे

♦इन्द्रजित्देव, चूना भट्टियां, सिटी सैंटर के नजदीक, यमुनानगर (हरियाणा)

भारतीय इतिहास में अनेक विद्वान् तथा बलवान् हुए हैं। हनुमान उनमें से एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति थे। उनकी सेवक के रूप में बहुत अच्छी ख्याति है। उनका जीवन आदर्श ब्रह्मचारी का भी रहा है परन्तु हमारे नादान पौराणिक भाइयों ने उन्हें बन्दर मानकर उनके साथ अन्याय किया है :–

एवं वे हैं जो दूसरों की छवि को देते हैं सुधार।
एक हम हैं लिया अपनी ही सूरत को बिगाड़।।

वे बन्दर न थे, अपितु पूर्णतः ऊपरोक्त गुणों से युक्त एक प्रेरक, आदर्श तथा कुलीन महापुरुष थे। कुछ प्रमाणों से हम इसे स्पष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम से उनकी प्रथम भेंट तब हुई थी, जब राम व लक्ष्मण भगवती सीता की खोज में इधर–उधर भटक रहे थे। खोजते–खोजते वे दोनों ऋष्यमूक पर्वत पर–सुग्रीव की ओर गए तो सुग्रीव उन्हें दूर से देखकर भयभीत हो गया। उसने अपने मन्त्रियों से यह कहा कि ये दोनों वाली के ही भेजे हुए हैं ऐसा प्रतीत होता है। हे वानर शिरोमणी हनुमान! तुम जाकर पता लगाओ कि ये कोई दुर्भावना लेकर तो नहीं आये हैं।

सुग्रीव की इस बात को सुनकर हनुमान जहाँ अत्यन्त बलशाली श्री राम तथा लक्ष्मण थे, उस स्थान के लिए तत्काल चल दिये। वहाँ पहुंचने से पूर्व उन्होंने अपना रूप त्यागकर भिक्षु (=सामान्य तपस्वी) का रूप धारण किया तथा श्री राम व लक्ष्मण के पास जाकर अपना परिचय दिया तथा उनका परिचय लिया।

तत्पश्चात् श्री राम ने अनुज लक्ष्मण से कहा–

नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।
नासामवेदविदुषः शक्यमेवं विभाषितुम्।।

वा.रा., किष्किन्धा काण्ड, तृतीय सर्ग, श्लोक २८, जिसे ऋग्वेद की शिक्षा नहीं मिली; जिसने यजुर्वेद का अभ्यास नहीं किया तथा जो सामवेद का विद्वान् नहीं है, वह इस प्रकार सुन्दर भाषा में वार्तालाप नहीं कर सकता।

नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहु व्याहरतानेन न किंचिदपशब्दितम्।।

–वा.रा., किष्किन्धा काण्ड, तृतीय सर्ग श्लोक २९

अर्थ : निश्चय ही इन्होंने सम्पूर्ण व्याकरण का अनेक बार अध्ययन किया है। यही कारण है कि इनके इतने समय बोलने में इन्होंने कोई भी त्रुटि नहीं की है।

न मुखे नेत्रयोश्चापि ललाटे च भ्रुवोस्तथा।
अन्येष्वपि च सर्वेषु दोषः संविदितः क्वचित।।

–वा.रामायण, किष्किन्धा काण्ड, तृतीय सर्ग, श्लोक ३०

अर्थ : सम्भाषण के समय इनके मुख, नेत्र, ललाट, भौंह तथा अन्य सब अंगों से भी कोई दोष प्रकट हुआ हो, ऐसा कहीं ज्ञात नहीं हुआ।

इससे स्पष्ट है कि हनुमान वेदों के विद्वान् तो थे ही, व्याकरण के उत्कृष्ट ज्ञाता भी थे तथा उनके शरीर के सभी अंग अपने–अपने करणीय कार्य उचित रूप में ही करते थे। शरीर के अंग जड़ पदार्थ हैं व मनुष्य का आत्मा ही अपने उच्च संस्कारों से उच्च कार्यों के लिए शरीर के अंगों का प्रयोग करता है। क्या किसी बन्दर में यह योग्यता हो सकती है कि वह वेदों का विद्वान् बने ? व्याकरण का विशेष ज्ञाता हो ? अपने शरीर की उचित देखभाल भी करे ?

रामायण का दूसरा प्रमाण इस विषय में प्रस्तुत करते हैं। यह प्रमाण तब का है, जब अंगद, जाम्बवान व हनुमान आदि समुद्रतट पर बैठकर समुद्र पार जाकर सीता जी की खोज करने के लिए विचार कर रहे थे। तब जाम्बवान ने हनुमान जी को उनकी उत्पत्ति कथा सुनाकर समुद्र लघ्घन के लिए उत्साहित किया। केवल एक ही श्लोक वहाँ से उद्धृत है :–

सत्वं केसरिणः पुत्रः क्षेत्रजो भीमविक्रमः।
मारुतस्यौरसः पुत्रस्तेजसा चापि तत्समः।।

–वा.रामायण, किष्किन्धा काण्ड, सप्तषष्टिम सर्ग,श्लोक २९

अर्थ : हे वीरवार! तुम केसरी के क्षेत्रज पुत्र हो। तुम्हारा पराक्रम शत्रुओं के लिए भंयकर है। तुम वायुदेव के औरस पुत्र हो, इसलिए तेज की दृष्टि से उन्हीं के समान हो। इससे सिद्ध है कि हनुमान जी के पिता केसरी थे परन्तु उनकी माता अंजनी ने पवन नामक पुरुष से नियोग द्वारा प्राप्त किया था। इस सत्य को स्वयं हनुमान जी ने भी स्वीकार किया, जब वे लंका में रावण के दरबार में प्रस्तुत किए गए थे।

अहं तु हनुमान्नाम मारुतस्यौरसः सुतः।
सीतायास्तु कृते तूर्णं शतयोजनमायतम्।।

–वा.रामायण, सुन्दरकाण्ड, त्रयस्त्रिंश सर्ग

अर्थ : मैं पवनदेव का औरस पुत्र हूँ। मेरा नाम हनुमान है। मैं सौ योजन पार कर सीता जी की खोज में आया हूँ।

हनुमान को मनुष्य न मानकर उन्हें बन्दर मानने वालों से हमारा निवेदन है कि इन दो प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध है कि हनुमान जी बन्दर न थे, अपितु वे एक नियोगज पुत्र थे। नियोग प्रथा मनुष्य समाज में अतीत में प्रचलित थी। यह प्रथा बन्दरों में प्रचालित होने को प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। रामायण के इस प्रबल प्रमाण के होते हुए हनुमान जी को मनुष्य मानना ही पड़ेगा।

रामायण में से ही हम तीसरा प्रमाण भी प्रस्तुत करते हुए सिद्ध कते हैं कि हनुमान मनुष्य ही थे, न कि वे बन्दर थे। यह

प्रमाण तबका है, जब हनुमान लंका में पहुंच तो गए थे किन्तु बहुत प्रयास करने पर भी सीता जी का पता न कर पाए तो वे सोचने लगे थे कि सीता जी का अता–पता पाए मैं यदि लौटूँगा तो राम जी तथा स्वामी सुग्रीव जी को क्या सूचना दूंगा ? वहाँ हा हाकार मचेगा। वाल्मीकि ऋषि के शब्दों में :–

सोऽहं नैव गमिष्यामि किष्किन्धां नगरीमितः।
वानप्रस्थो भविष्यामि ह्यदृष्ट्वा जनकात्मजाम्।।
वा.रा., सुन्दरकाण्ड, सप्तम सर्ग

अर्थ : मैं यहाँ से लौटकर किष्किन्धा नहीं जाऊंगा। यदि मुझे सीता जी के दर्शन नहीं हुए तो मैं वानप्रस्थ धारण कर लूंगा। हनुमान जी को मनुष्य न मानकर बन्दर घोषित करने वाले अपने पौराणिक भाई–बहनों से निवेदन है किवे अपना हठ त्याग कर यह तथ्य तुरन्त स्वीकार कर लें कि हनुमान सच्चे वैदिक धर्मी मनुष्य थे, न कि वे बन्दर थे क्योंकि वानप्रस्थी बनने की बात सोचना तो दूर की बात है, वानप्रस्थ क्या होता है, बंदरों को यह भी ज्ञात नहीं होता। हनुमान को बंदर मानने वाले लोग तुलसीदास गोस्वामी द्वारा रचित "हनुमान चालीसा" का पाठ करते हैं परन्तु उसमें भी एक प्रमाण ऐसा है जो हमारी बात का समर्थन करता है :–

हाथ वज्र औ ध्वजा विराजे।
कांधे मूंज जनेऊ साजे।।

काश! ऐसे लोग इस चालीसा में उल्लिखित यह पांचवा पद बोलते–पढ़ते समय इतना समझ पाते कि इसके अनुसार हनुमान जी अपने कंधे पर जनेऊ धारण किए फिरते थे तथा बंदर नहीं, अपितु जनेऊ (=यज्ञोपवीत) तो मनुष्य ही धारण करते हैं।

हनुमान दूरस्थ किसी पर्वत पर जाकर मूर्च्छित लक्ष्मण के उपचार के लिए संजीवनी बूटी लाए थे। यह कार्य भी कोई बंदर नहीं कर सकता अपितु कोई मनुष्य ही कर सकता था जिसे जड़ी–बूटियों का पर्याप्त ज्ञान हो।

हनुमान से हटकर अब थोड़े विचार उनके समकालीन रामायण के कुछ अन्य पात्रों के विषय में भी प्रस्तुत हैं। इनमें एक प्रसंग वाली की पत्नी तारा से सम्बद्ध है। जब सुग्रीव दूसरी बार वाली को युद्ध के लिए ललकारने गया तो वाली की पत्नी तारा ने अपने पति को राम जी से मैत्री कर लेने की प्रार्थना की परन्तु वाली ने ऐसा न करके सुग्रीव का सामना करने, सुग्रीव का घमण्ड चूर–चूर करने, परन्तु सुग्रीव के प्राण हरण न करने का वचन देकर तारा को वापिस राजप्रसाद में चले जाने को कहा तो :–

ततः स्वस्त्ययनं कृत्वा मंत्रविद् विजयैषिणी।
अन्तः पुरं सह स्त्रीभिः प्रविष्टा शोकमोहिता।।
–वा.रा. किष्किन्धा काण्ड, षोडश सर्ग श्लोक १२

अर्थ : वह पति की विजय चाहती थी तथा उसे मंत्र का भी ज्ञान था। इसलिए उसने वाली की मंग्ङल–कामना से स्वस्तिवाचन किया तथा शोक से मोहित होकर वह अन्य स्त्रियों के साथ अन्तः पुर को चली गई।

मंत्र का ज्ञान बंदरों को अथवा बंदरियों को नहीं होता, न ही हो सकता है। अतः सिद्ध है कि हनुमान का जिनसे मिलना–जुलनादि था, उनकी पत्नियाँ भी मनुष्य ही थीं। यही तारा जब अपने पति वाली को प्राण त्यागते देख रही थी तो अन्य बातों के अतिरिक्त यह भी बोली–

यद्यप्रियं किंचिदसम्प्रधार्य कृतं मया स्यात् तव दीर्घबाहो।
क्षमस्व में तद्धरिवंशनाथ व्रजामि मूर्धा तव वीरपादौ।।
–वा.रा.किष्किंधाकाण्ड, एकविंश सर्ग, श्लोक

अर्थ : "महाबाहो! यदि नासमझी के कारण मैंने आपका कोई अपराध किया हो तो आप उसे क्षमा कर दें। वानरवंश के स्वामी वीर आर्यपुत्र! मैं आपके चरणों में मस्तक रखकर यह प्रार्थना करती हूँ।" इस श्लोक से सिद्ध है वाली आर्यों के एक वंश वानर में जन्मा मनुष्य ही था। इसी प्रकार तारा को भी महर्षि वाल्मीकि ने आर्य पुत्री ही घोषित किया :–

तस्येन्द्रकल्पस्य दुरासदस्य महानुभावस्य समीपमार्या।
आर्ततितूर्णा व्यसनं प्रपन्ना जगाम तारा परिविह्वलन्ती।।
–वा.रा.किष्किंधा काण्ड, चतुर्विंश सर्ग श्लोक २६

अर्थ : "उस समय घोर संकट में पड़ी हुई शोक पीड़ित आर्या तारा अत्यन्त विह्वल हो गिरती–पड़ती तीव्र गति से महेन्द्र तुल्य दुर्जय वीर महानुभाव श्री राम के समीप गई।"

वाली की मृत्यु के पश्चात् अग्ङद व सुग्रीव ने वाली के शव का अंत्येष्टि–संस्कार शास्त्रीय विधि से किया :–

ततोऽग्नि विधिवद् दत्त्वा सोऽपसव्यं चकार ह।
पितरं दीर्घमध्वानं प्रस्थितं व्याकुलेन्द्रियः।।
संस्कृत्य वालिनं तं तु विधिवत् प्लवगर्षभाः।
आजग्मुरुदकं कर्तुं नदीं शुभजलां शिवाम्।।
–वा.रा. किष्किंधा काण्ड, षड्विंश सर्ग, श्लोक ५०–५२

अर्थ : "फिर शास्त्रीय विधि के अनुसार उसमें आग लगाकर उन्होंने उसकी प्रदक्षिणा की। इसके बाद यह सोचकर कि मेरे पिता लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थित हुए हैं, अग्ङद की सारी इन्द्रियाँ शोक से व्याकुल हो उठीं। इस प्रकार विधिवत् वाली का दाह संस्कार करके सभी वानर जलाञ्जलि देने के लिए पवित्र जल से भरी हुई कल्याणमयी तुग्ङभद्रा नदी के तट पर आए।"

इस प्रमाण से सिद्ध होता है कि वाली, सुग्रीव, अग्ङद आदि वेद विहित शास्त्रीय कार्य करते थे। यह भी उनके मनुष्य होने का प्रमाण है।

उपर्युक्त तथ्यों के बाद हम अब सामान्य विश्लेषण करते हुए पौराणिकों से पूछते हैं कि वाली की पत्नी तारा, सुग्रीव की पत्नी रुमा हनुमान की माँ अंजनि मनुष्य योनि की स्त्रियाँ थीं

तो उनके माताओं–पिताओं ने उन्हें बंदरों अर्थात् वाली, सुग्रीव तथा केसरी के सग्ङ क्यों ब्याह दिया था ? बन्दरों व स्त्रियों से बंदरों का जन्म होना अव्यवहारिक व अवैज्ञानिक है। अतः यह सर्वथा अमान्य है कि उक्त पुरुष बंदर थे। यह भी निवेदन है कि बंदरों, उनकी पत्नियों, उनके पिताओं तथा उनकी माताओं के नाम नहीं होते, उनके जीवन का कोई इतिहास नहीं होता, खाने–पीने व सोने–जागने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य वे करते नहीं। फिर उपरोक्त पात्रों के नामाकरण क्यों हुए ? उनके कार्य–व्यवहार मनुष्यों जैसे–कैसे संभव हुए ?

वास्तविकता यह है कि वानर एक जाति है। इसे आंग्ल भाषा में सरनेम भी कहते हैं। हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा व हमीरपुर जिलों में नाग जाति के कुछ मनुष्य आपको मिल सकते हैं। नाग शब्द का अर्थ सर्प है परंतु वे इस शब्द को अपने नाम के साथ सहर्ष लिखते हैं। पिछले वर्ष केन्द्र सरकार में कार्यरत एक उच्चाधिकारी जब सेवानिवृत्त हुए था तो किसी विशेष कारण वश उसका नाम भी दैनिक पत्रों में छपा था। तब पता चला कि वह भी उपरोक्त नाग जाति का ही सदस्य था। सन् १९६९ में भारत के राष्ट्रपति पद पर वी.वी. गिरि नामक एक दक्षिण भारतीय व्यक्ति आसीन हुआ था। गिरि शब्द का अर्थ पर्वत है परन्तु वह पर्वत न होकर मनुष्य ही था। गिरि उसका सरनेम था या उसकी जाति थी। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, राजस्थान, उत्तरप्रदेश तथा कुछ अन्य प्रदेशों में बहुत से लोग (अधिकतर जन्मना क्षत्रिय) अपने नाम के साथ सिंह शब्द का प्रयोग करते हैं, जिसका अर्थ शेर है। हरियाणा में बहुत–से लोग मोर जाति से सम्बद्ध हैं और उनके नाम के पीछे मोर शब्द लिखा होता है। पंजाब के एक राज्यपाल जयसुख लाल हाथी हुए हैं। हरियाणा में सिंह मार नामक जाति के कई व्यक्ति आपको मिल सकते हैं।

इस वर्णन के आधार पर हमारा निवेदन है कि जिस प्रकार नाग, गिरि, मोर, सिंह, हाथी व सिंह मार नामक जातियाँ मनुष्यों की ही हैं, न कि सर्पों, पर्वतों, शेरों, हाथियों व शेरों के हत्यारों आदि की हैं, हालांकि इनके शाब्दिक अर्थ ऊपरोक्त ही है। इसी प्रकार रामायण के हनुमान, सुग्रीव, बाली, तारा, रुमा, जाम्बवान व अग्ङद आदि वानर नामक मनुष्य जाति के सदस्य थे, न कि ये बंदर थे। यह उनके कार्यों व इतिहास से प्रमाणित किया गया है।

भजनोपदेशक वीरी सिंह आर्य

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

श्री वीरी सिंह जी आर्य समाज के प्रति बचपन से ही आकर्षित हुए। उनमें आर्य समाज की शिक्षाऐं, नियम कूट–कूट कर भरे हैं। वे आर्य समाज के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हैं। वीरी सिंह जी आर्य समाज खरीहड़ी के वार्षिक उत्सव में प्रतिवर्ष अपनी धर्मपत्नी सहित कार्यक्रम में भाग लेते हैं। उनके कार्यक्रम में आने से विशेष रौनक और उत्साह का सृजन होता है। इस वर्ष भी आर्यजगत् के मुख्य संगीतकार श्री वीरी सिंह व उनकी पत्नी श्रीमती नीलां आर्या तथा तबला वादक श्री तिलक राज ने समारोह को चार चांद लगाने में कोई कसर न छोड़ी। श्री वीरी सिंह भजनोपदेशक समस्त व्यस्तताओं को तिलांजली देकर अपनी बकरियों को बड़े भाई के सुपर्द कर १८ सितम्बर २०१५ बाद दोपहर ३.०० बजे पधारे। उन्होंने स्वामी संतोषानन्द की अनुपस्थिति को भी अपनी मधुर मनोहर और मार्मिक संगीत की ध्वनि से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। श्री वीरी सिंह जी ने हिन्दी तथा पहाड़ी भाषा में भजनों की अमृत वर्षा की और उत्सव को संगीतमय बनाया। सभी उपस्थित जनता द्वारा श्री वीरी सिंह आर्य एवं ढोलक वादक तिलक राज की भूरी–भूरी प्रशंसा की।

१९ सितम्बर कार्यक्रम प्रारम्भ होने से पूर्व ही उत्सव के आयोजक की गऊ का गौशाला के बाहर निधन हो गया। डॉक्टरों द्वारा उसका जीवन बचाने का भरसक प्रयत्न किया किन्तु वह उठ न सकी। लगभग १० दिन के भीतर उसने बच्चे को जन्म देना था किन्तु ऐसा सम्भव न हो सका, उसका निधन हो गया। वियोग की इस घड़ी में श्री वीरी सिंह द्वारा की गई भक्तिरस की गंगा प्रवाहित करने में सहयोग दिया। अपने संगीत से श्री वीरी सिंह द्वारा बहुत ही मधुर मनोहर एवं मार्मिक शब्दों में जीवन की नश्वरता पर प्रकाश डाला उन्होंने जन समूह को सम्बोधित करते हुए बार–बार बाताया कि शरीर का अन्त होने पर केवल मात्र हमारे शुभ कर्म ही आगे साथ देते हैं और प्राणी का भावी जीवन निर्धारित करते हैं। उन्होंने बताया ऐसे सुकर्मों के बीज बोकर संसार से जाओ ताकि जनता तुम्हारी गाथा के गीत मरणोपरान्त भी गाती रहे। जीवन वही सार्थक है जो प्रभु चरणों में लगे और मानवता के आंसू पौंछता रहे। श्री वीरी सिंह प्रतिवर्ष अपने गृह गाँव मकेहड़ (चोलथरा) तह. सरकाघाट में नवम्बर मास में आर्य समाज का सम्मेलन निजीतौर पर करते हैं। जिसमें बाहर से भजनोपदेश और संन्यासी उत्सव में आमन्त्रित किये जाते हैं। घण्डरां मठ के संचालक स्वामी संतोषानन्द जी प्रतिवर्ष अपनी व्यस्तता से समय निकाल कर इस उत्सव में भाग अवश्य लेते हैं। हमीरपुर, नगरोटा, मण्डी और सुन्दरनगर से आर्य प्रेमी प्रतिवर्ष वीरी सिंह जी के उत्सव में अपनी उपस्थिति अवश्य दर्ज करवाते हैं। रात्री ठहराव और भोजन की उत्तम व्यवस्था होती है जिसके लिए वीरी सिंह जी बधाई के पात्र हैं।

कारगिल विजय दिवस

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

कारगिल युद्ध भारत और पाकिस्तान के बीच मई और जुलाई १९९९ के बीच कश्मीर के कारगिल जिला में हुए सशस्त्र संघर्ष का नाम है। पाक सेना ने कश्मीरी उग्रवादियों के साथ मिलकर पाकिस्तान और भारत के बीच की नियन्त्रण रेखा पार करके भारत की ज़मीन पर कब्जा करने की कोशिश की। पाकिस्तान ने तो दावा किया कि लड़ने वाले सभी कश्मीरी उग्रवादी हैं किन्तु युद्ध में मिले दस्तावेज़ों और पाकिस्तान नेताओं के बयानों से सिद्ध हुआ कि पाक सेना प्रत्यक्ष रूप से इस युद्ध में शामिल थी। भारतीय सेना और वायुसेना ने पाकिस्तान के कब्जे वाली जगहों पर हमला किया और धीरे–धीरे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से पाकिस्तान को सीमा पार वापस जाने को मजबूर किया। यह युद्ध ऊंचाई वाले इलाके पर हुआ और दोनों देशों की सेनाओं को लड़ने में काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।

पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमन्त्री नवाजशरीफ और सेना प्रमुख करामात के बीच १९९८ में मतभेद बढ़ गये, जिसके चलते करामात ने अपने पद से त्याग–पत्र दे दिया। नवाज शरीफ ने जनरल परवेज मुशर्रफ को सेना प्रमुख पद पर नियुक्त किया। कश्मीर के कारगिल क्षेत्र में नियंत्रण रेखा पर घुसपैठ करने के षडयन्त्र के पीछे नव नियुक्त सेना प्रमुख परवेज मशर्रफ को ही जिम्मेदार माना जाता है। मई १९९९ में एक स्थानीय ग्वाले से मिली सूचना के बाद बटालिक सैक्टर में लै. सौरभ कालिया के पैट्रोल पर हमले ने उस इलाके में घुसपैठियों की उपस्थिति का पता दिया। शुरू में भारतीय सेना ने इन घुसपैठियों को जिहादी समझा और उन्हें खदेड़ने के लिए कम संख्या में अपने सैनिक भेजे किन्तु जवाबी हमले और एक के बाद एक कई इलाकों में घुसपैठियों के होने के समाचार के बाद भारतीय सेना को समझने में देर नहीं लगी कि वास्तव में यह योजनाबद्ध ढंग से बड़े पैमाने पर की गई घुसपैठ थी, जिसमें केवल उग्रवादी ही नहीं पाकिस्तानी सेना भी सम्मिलित थी। यह बात समझ में आते ही भारतीय सेना ने आप्रेशन विजय शुरू किया, जिसमें तीस हज़ार भारतीय सैनिक शामिल हुए थे। हिमाचल प्रदेश के ५० नौजवान मोर्चे पर दुश्मनों के दान्त खट्टे करते हुए शहीद हुए, जिनकी वीरता की कहानियाँ सुनने और पढ़ने योग्य हैं। देश को उन बहादुर सैनिकों पर गर्व है। १९७४ में जन्में कै. विक्रम बतरा जिला कांगड़ा के पालमपुर के निवासी थे। १९९९ में देहरादून में भारतीय सैन्य अकादमी के लिए चुने गये थे। कमीशन के बाद वह जम्मू–कश्मीर राइफल्स में लैफ्टिनैंट के रूप में तैनात हुए और कारगिल युद्ध में वह कैप्टन रैंक तक पहुँचे।

जिला बिलासपुर के कलोल गाँव में जन्में हवालदार संजय कुमार को युद्ध के दौरान फ्लैट शीर्ष पर कब्जा करने के लिए टीम के प्रमुख स्काऊट के रूप में चुना गया। छाती पर दुश्मन की दो गोलियाँ लगने पर भी वे दुश्मन के बंकर तक बढ़ते गए। आमने–सामने की लड़ाई में उन्होंने तीन दुश्मन सैनिकों को मार गिराया। दुश्मन की मशीनगन उठा कर घायल अवस्था में दूसरे बंकर पर हमला बोल दिया। उनकी बहादुरी को देखकर दुश्मन वहाँ से भाग खड़ा हुआ और अपना लक्ष्य 'फ्लैट टॉप' पर कब्जा कर लिया। पालमपुर के कै. सौरभ कालिया की बहादुरी और जिन्दादली की दूसरी कोई मिसाल नहीं। दुश्मन ने कालिया को गरिफ्तार कर अमानवीय यातनाऐं देकर उनका पूरा शरीर क्षत विक्षत कर दिया था, जिसे सुनकर भी आदमी की रूह कांप जाय किन्तु उस शूरवीर ने दुश्मन के आगे अपनी जुबान तक नहीं खोली, दुश्मन को कोई रहस्य नहीं बताया। शरीर पर पड़े घावों से मालूम हुआ कि कठोर यातनाऐं भारतीय सेना के जांबाज़ शहीद कै. सौरभ कालिया ने कई दिन झेली थीं। पाक सरकार और सैनिकों ने जेनेवा कन्वेंशन का उल्लंघन किया हैं अतः इस मसले को अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में ले जाना चाहिए। जिला ऊना के चिन्तपूर्णी निवासी अमोल कालिया स्वामी विवेकानन्द को अपना आदर्श मानते थे। बलिदान के समय उनकी जेब से स्वामी जी का प्रेरक संदेश मिला था–'विश्वास करो तुम महान् हो तथा महान् कार्यों के लिए ही तुम जन्में हो। उठो काम करो, तुम्हारे देश को वीर नायक चाहिए तुम चट्टान की तरह स्थिर रहो, बहादुर बनो।'' सोलह हजार फुट की ऊंची बर्फीली चोटी को दुश्मनों से मुक्त करवाते हुए शहीद कैप्टन अमोल कालिया ने एक–एक शत्रु को ढेर कर दिया और तिरंगा लहराते हुए स्वयं भी शहीद हो गये। भारत के राष्ट्रपति ने अमोल को मरणोपरान्त वीर चक्र से अलंकृत कर राष्ट्र की तरफ से अमोल के ज़ज्बे को सलाम किया। सुजानपुर के बीड़ वगेहड़ा क्षेत्र के पलाहीं गाँव के सपूत राकेश कुमार, बगवाड़ा क्षेत्र के समलेहड़ा गांव के शहीद हवालदार स्वामीदास, सरकाघाट के बरोटी निवासी राइफलमैन दीप चन्द और हवालदार प्यार सिंह, फिल्म शोले के हीरो जय और वीरू की भांति सेना में चर्चित प्रगाढ़ मित्र हवालदार कश्मीर सिंह और हवालदार राज कुमार की दोस्ती के किस्से सेना के जवानों से सुनने को मिलते थे। ऐसी दोस्ती कि मौत भी दोनों को अलग न कर सकी। एक ही दिन दोनों के पार्थिव शरीर तिरंगे में लिपटे

उनके घरों में पहुंचे। उक्त सभी कारगिल वीरों की शहादत आज भी हमारे दिलों में ताजा है। वे हमारे कल के लिए अपना आज दे गये। शहीद शूरवीरों को हमारा कोटी–कोटी नमन। कारगिल युद्ध को बहुत करीब से देखने वाले जनरल के.एस. जम्बाल ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए पत्रकारों को बताया–'आप्रेशन विजय भारतीय सेना के अदम्य साहस व ज़ज्बे की जीत है। अति दुर्गम और कठिनतम परिस्थितियों में मुकाबला कर भारतीय सैनिकों ने जीत की जो इबारत' रची, वह आज तक के इतिहास में कहीं नहीं मिलती। युद्ध के दौरान हम अंडरग्राऊंड आप्रेशन रूम में थे और कई रातें बिना सोये गुजारी थीं। भारतीय सेना प्रमुख और आर्मी कमांडर के साथ जब हम सैनिकों को मोर्चे के लिए रवाना करते थे तो वे क्षण अति भावुक होते थे क्योंकि युद्धक्षेत्र में जाने वाले सैनिक को पता नहीं होता था कि वह वापस लौट सकेगा कि नहीं। उस समय का दृश्य मन को झकझोर देता था।'' युद्ध सेवा मैडल विजेता सेवानिवृत ब्रिगेडियर खुशहाल ठाकुर जो २६ जुलाई २०१५ को द्रास–कारगिल में आयोजित कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर पधारे थे ने बताया–''कारगिल युद्ध को १६ वर्ष हो चुके हैं। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी स्वयं भारी गोलीबारी के बीच कारगिल आए थे। अमरीकी राष्ट्रपति ने नवाज शरीफ के कहने पर प्रधानमन्त्री वाजपेयी को वार्ता के लिए आमन्त्रित किया किन्तु अटल जी ने कहा–जब तक भारत में घूसे प्रत्येक घुसपैठी को मार–मार कर भगा नहीं लेता तब तक वार्ता नहीं करूंगा। इसी जज़्बे के सहारे २६ जुलाई १९९९ को अंततः पूर्ण विजय हासिल की गई।'' दो महीने से ज्यादा चले युद्ध में भारतीय सेना ने पाक सेना को मार भगाया था आखिरकार २६ जुलाई को अंतिम चोटी पर भी जीत पा ली। यही दिन 'कारगिल विजय दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

अनुशासन

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

अनुशासन का अर्थ शासन के पीछे चलना है अर्थात् शासन के नियमों पर चलना तथा आज्ञाओं का पालन करना। जो व्यक्ति नियमों का पालन करता है तथा अपना कर्तव्य निष्ठा पूर्वक निभाता है, अनुशासित समझा जाता है। संयम भी अनुशासन का ही एक रूप माना जाता है।

सफलता के लिये दृढ़ निश्चय और परिश्रम के साथ–साथ अनुशासन का होना भी आवश्यक है। अनुशासन किसी भी समाज, परिवार संस्था या देश की स्मृद्धि और उत्थान के लिये परमावश्यक समझा जाता है। इससे समस्याओं की कमी होती है, कार्य क्षमता बढ़ती है और यह कार्य क्षेत्र में वातावरण के उत्तम बनाता है। जैसे बस में पहले सवारियों को उतरने दें और पंक्तिबद्ध होकर बारी से चढ़ें तो कार्य सुचारू ढंग से निपटेगा और कोई असुविधा भी नहीं होगी। परन्तु यदि यात्रियों के उतरने से पहले धक्कम्–धक्का कर चढ़ने का प्रयास करें, दूसरों को चढ़ने न दें तो सभी को असुविधा होगी। बूढ़े, बच्चे तथा स्त्रियाँ आसानी से स्थान प्राप्त नहीं कर सकेंगे, समय की भी अधिक हानि होगी। इसीलिये अनुशासन को मशीन का तेल कहा गया है जो हर पुर्जे को ठीक चलाता है जिससे सारी मशीन ठीक काम करती है। सारा कार्य ठीक निपट जाता है और समय पर पूर्ण होता है। अतः अनुशासन की सड़क, घर, खेल के मैदान, संस्था, परिवार, समाज में अर्थात् हर जगह आवश्यकता होती है और अनुशासनहीनता असुविधा और समस्यायें उत्पन्न करती है। यदि मुख्य व्यक्ति या अधिकारी स्वयं अनुशासन का पालन करने वाला हो तो सभी अधीनस्थ भी स्वयं अनुशासन का पालन करने लग पड़ते हैं। जैसे एक बस चालक समय पालक है, तो वह उस बस द्वारा यात्रा करने वाले सभी यात्रियों को विवश करता है कि वे भी समय का पालन करें, नहीं तो वे उस सुविधा से वंचित रह जायेंगे। यही नियम परिवार, संस्था तथा समाज पर भी लागु होता है। यदि इनके मुखिया स्वयं अनुशासित, संयमी, परिश्रमी हों तो अन्य सदस्य भी उनसे प्रेरणा लेकर उन गुणों को अपनायेंगे। अतः दूसरों को अनुशासित करने से पूर्व स्वयं अनुशासित होना परमावश्यक है। ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जहाँ आज्ञा या नियमों का पालन करते हुये व्यक्तियों ने अपनी जान की बाज़ी लगा दी परन्तु, उनकी अवहेलना नहीं होने दी। उन्होंने ने प्राणों को कर्तव्य के सम्मुख तुच्छ समझा। ऐसा कर वे इतिहास में अपना नाम अमर कर गये। ऐसे कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं :–

सुक्रात, युनान के दार्शनिक पर नौजवानों को उकसाने तथा विद्रोह का षडयन्त्र रचाने का आरोप लगा, अभियोग चलाया गया तथा मृत्यु दण्ड दिया गया। मृत्यु के लिये उसे ज़हर का कटोरा दिया गया। ज़हर पीने के पश्चात सुक्रात ने पूछा कि नियमानुसार उसे कैसा व्यवहार करना चाहिये। उसे बताया गया कि उसे तब तक चलना चाहिये, जब तक ज़हर का उस पर प्रभाव हो जाये और वह असमर्थ होकर गिर पड़े। सुक्रात तब तक चलता रहा जब तक ज़हर के प्रभाव से असमर्थ हो गिर न गया। उसकी मृत्यु का दृश्य देखने वाले उसके आचरण से इतने प्रभावित हुये कि वे सभी एक आवाज़ से बोल उठे कि ऐसा व्यक्ति विद्रोही हो ही नहीं सकता। युनान वासियों ने अपनी भूल सुधारी। जीवित सुक्रात को उन्होंने ज़हर का प्याला

दिया परन्तु मृत्यु के पश्चात् उसी स्थान पर मूर्तियाँ स्थापित की ताकि आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा मिले।

सिसली के निकट ज्वालामुखी फूट पड़ा। गर्म धूल पड़ने से शहर को खतरा हो गया। सभी झुलसने लगे, शहर जल उठा। लोग जान बचाने के लिये शहर छोड़कर भाग गये। कुछ समय पश्चात ज्वालामुखी शान्त हो गया। लोग लौट आये। शहर को साफ करते हुये मलबे के ढ़ेर से एक पहरेदार का मृत शरीर निकला जो उसी स्थान पर पहरा दे रहा था। वह अब भी हाथ में बन्दूक थामे हुये था। यह कर्तव्य निष्ठा की चरम सीमा थी। अतः उसका बुत पहरेदार की मुद्रा में वहीं स्थापित किया गया। वहाँ से हर गुजरने वाला सैनिक उसे अभिवादन किये बिना नहीं जाता। यह कर्तव्य के प्रति समर्पण का सर्वोत्तम उदाहरण था।

माता जीजा बाई ने सामने पहाड़ी पर सिंह गढ़ का दुर्ग देखकर शिवा जी से इच्छा प्रकट की कि प्रातः तक दुर्ग पर उसकी विजय पताका फैहरनी चाहिये। शिवा जी ने तानाजी को बुला भेजा जो अपने बेटे के विवाह में व्यस्त था। विवाह की रस्मों को बीच में ही छोड़ ताना जी अपनी सैनिक टुकड़ी के साथ विजय अभियान पर निकल पड़ा। बड़ी कठिनाई से अंधेरे में दुर्ग पर चढ़ने के लिये रस्सा लगाया। अभी कुछ सैनिक ही दुर्ग पर चढ़े थे कि रस्सा टूट गया। ताना जी ने उन चन्द सिपाहियों की सहायता से अदम्य साहस का परिचय देते हुये, मुगल सैनिकों को मार भगाया। परन्तु बहुत बड़ी कीमत चुका कर। ताना जी रण में खेत रहे। शिवा जी को उनकी मृत्यु का बड़ा खेद हुआ। माता को समाचार देते हुये उन्होंने भारी मन से कहा, माँ गढ़ जीत लिया है परन्तु सिंह मारा गया।

सोमनाथ मन्दिर के परिवार में ही एक छोटा सा भवन है जिसे हमीर की डेहर कहते हैं। हमीर गोहिल सैनिक परिवार का लड़का था जिनका कार्य मन्दिर सुरक्षा का था। महमूद गज़नवी ने जब सोमनाथ पर आक्रमण किया हमीर का भाई घर पर न था। परन्तु अपना नैतिक कर्तव्य समझते हुये भाभी ने हमीर को मन्दिर रक्षा के लिये भेजा। हमीर इस कार्य के लिये छोटा था। इसकी अभी दाढ़ी मूंछ भी न आई थी। आज्ञा पाकर वह तुरन्त वहाँ पहुँचा जहाँ गिर का राजा मन्दिर की रक्षा कर रहा था। वह बड़े जोश से लड़ा परन्तु वीरगति को प्राप्त हुआ। उसका सिर वहीं गिरा था जहाँ डेहरी है परन्तु धड़ ५० मीटर दूर चौक में गिरा जहाँ उसकी मूर्ति लगी है। यह वृतान्त गुजराती में एक पट्टिका पर लिखा है जो डेहरी के बाहर लगाई गई है।

अतः अनुशासन का पालन डण्डे या भय के जोर से नहीं किया जाना चाहिये। इसे धर्म का एक रूप मानकर या नैतिक कर्तव्य समझकर पालन किया जाना चाहिये।

(प्रेरक प्रसंग)

शमशान भूमि मनुष्य का सबसे बड़ा शिक्षक है।

२३ सितम्बर २०१५ को मैं शमशान भूमि में अपने ग्राम की महिला के अंतिम संस्कार में भाग लेने गया था। वहाँ मेरे प्रिय मित्र श्री पी.एल. गुप्ता जी भी उपस्थित थे। मैंने उनसे अनुरोध किया कि काफी समय पूर्व आपके छोटे भाई साहब भी स्वर्ग लोक सिधार गये थे। उसमें आपका मन और मस्तिष्क का विचलित होना स्वाभाविक था। मैं केवल मात्र यही जानना चाहता हूँ कि उस समय शमशान भूमि में आपके मन और मस्तिष्क में किस प्रकार के विचार कौंध रहे थे। श्री गुप्ता जी ने तुरन्त कहा, यह मत पूछो। मेरा २३ वर्षीय भाई सदा और सर्वदा के लिए हमें छोड़कर चला गया। हमारे समस्त परिवार का शोक में डूबना स्वाभाविक ही था। उन्होंने मुझे एक बात कही कि उस समय मेरे समधि जिनकी बेटी की शादी मेरे भाई के साथ हुई थी ने मुझे कहा कि गुप्ता जी आप तो शमशान भूमि से घर चले जाएंगे लेकिन अब मेरी २२ वर्षीय बेटी का क्या बनेगा ? मैंने उनकी पीठ पर हाथ रखते हुए कहा चिंता मत करो जैसे वह तुम्हारी बेटी है, वैसी ही मेरी बेटी भी है। मैंने घर आते ही स्नानादि करके अपनी पत्नी से समधि की बात बताई और उसे कहा कि हमें अपनी छाती पर पत्थर रखकर इस बेटी का उपकार और उद्धार करना होगा। मैंने और मेरी पत्नी ने यह अटल निर्णय कर लिया कि उसकी शादी निकट भविष्य में कहीं कराकर अपने समधि के ऋण से मुक्त हो जाएंगे। दैवीय योग से कुछ ही दिनों उपरोक्त हमने इस बिटिया के लिए एक अच्छा रिश्ता ढूंढ निकाला। सभी प्रसन्न थे। लेकिन कन्या दान कौन करायेगा। इस सम्बंध में मेरी पत्नी शांता ने तुरन्त कहा कि हम दोनों मिलकर कन्या दान करेंगे। मैंने उसके सुझाव पर अपनी स्वीकृति के लाल–लाल गुलाब के फूल डाल दिए। इस बिटिया की शादी बड़े सरल तरीके से सम्पन्न करा दी गई। ऐसा करके हमारे सिर से मानो, बहुत बड़ा बोझ उतर गया और हमने राहत की सांस ली। हमने अनुभव किया कि हमने जीवन में पहली बार कुछ प्राप्त किया। ऐसा कहकर गुप्ता जी के नैन सजल हो गये। मैंने उन्हें कहा आप और शांता गुप्ता जी को ईश्वर दीर्घायु करे ताकि लोग आपके जीवन से प्रेरणा ग्रहण करते रहें। आपका जीवन स्तुत्य, शालाघ्य और सभी के लिए प्रेरणा स्त्रोत बना रहेगा।

–कृष्ण चन्द आर्य

आर्य समाज के प्रति अटूट श्रद्धावान साहित्यकार प्रेमचंद

♦डॉ रमा, प्रो. हिन्दी विभाग, हंसराज कॉलेज, दिल्ली

भारत के संस्कृति, शिक्षा और समाज के विकास में जिन आंदोलनों ने गहरे तक प्रभावित किया उनमें आर्य समाज द्वारा चलाये गए आंदोलन सबसे अधिक प्रभावशाली रहे। आर्य समाज ने आध्यात्मिकता को आधार अवश्य बनाया लेकिन कभी धर्मांधता को प्रश्य नहीं दिया, बल्कि धार्मिक और सामाजिक रूढ़ियों का पूरे बल के साथ विरोध किया। अपनी सामाजिक सरोकारों की सोच के कारण भारतीय समाज के समाज सेवी, साहित्यकार, कलाचिंतक और अन्य क्षेत्रों के मनीषियों को आर्य समाज ने हमेशा प्रभावित किया। स्वतंत्रता आंदोलनकारियों के सर्वेक्षण के अनुसार स्वतंत्रता के लिए ८० प्रतिशत व्यक्ति आर्य समाज के माध्यम से आए थे। इसी बात को कांग्रेस के इतिहासकर डॉ. पट्टाभि सीतारमैया ने भी लिखा है। लाला लाजपतराय पं. रामप्रसाद बिस्मिल, शहीदे आजम भगत सिंह, श्यामजी कृष्ण वर्मा, मदनलाल ढींगरा, वीर सावरकर, महात्मा गांधी के राजनैतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले आदि बहुत से नाम हैं।

प्रेमचंद का समग्र जीवन सुधारवादी आंदोलन के प्रभावों में बीता। उनके साहित्य और जीवन में सुधारवादी दृष्टि को साफ महसूस किया जा सकता है। यहाँ यह बताते हुए चलना आवश्यक है कि सुधारवादी आंदोलनों में आर्य समाज की भूमिका सर्वश्रेष्ठ रही है। जाति–पाति का विरोध धार्मिक और सामाजिक रूढ़ियों का विरोध, बाल–विवाह को समूल नष्ट करने के साथ स्त्री–शिक्षा, विधवा विवाह और हिन्दी के विकास में लगातार प्रयास किया। प्रेमचन्द का जीवन और साहित्य दोनों ही आर्य समाज से हमेशा प्रभावित रहा। उसके सिद्धांतों और नियमों को उनके व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों में ही दोनों में ही अंदर तक महसूस किया जा सकता है। वह आर्य समाज के आंदोलन और प्रसार–प्रसार में आजीवन अपना सहयोग देते रहे। आर्य समाज के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में उन्होंने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। उनका लाहौर में आर्यों के विराट् सम्मेलन में दिया गया भाषण भी हमारे देश के छद्म धर्म निरेपक्ष लोगों की पुस्तकों में उपेक्षित रहा और देश के सर्वप्रथम राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान स्वामी श्रद्धानन्द जी के गुरुकुल कांगड़ी में दिया गया व्याख्यान भी इनके बहिष्कार का शिकार हो गया। आर्य समाज के सुप्रसिद्ध चिंतक श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने प्रेमचन्द के आर्य समाज में दिये गए योगदान पर महत्वपूर्ण शोध किया है। उनके अनुसार मार्क्सवादी लेखकों ने प्रेमचन्द जी के आर्य समाज से यथार्थ सम्बन्धों की अपने लेखन में उपेक्षा की और किसी ने उन्हें गोर्की का चेला सिद्ध किया तो किसी ने कुछ गांधीवादी बना दिया। वह पूछते हैं कि उस युग का कौन सा हिन्दी प्रेमी, देशभक्त साहित्यकार है जिस पर महर्षि दयानन्द के जीवन व विचारधारा की छाप नहीं पड़ी ? वह लिखते हैं कि आश्चर्य की बात यह है कि विश्वप्रसिद्ध कहानीकार सुदर्शन जी के अभिन्न हृदय मित्र मुंशी प्रेमचन्द जी को ऐसे प्रस्तुत किया जा रहा है कि मानो वे आर्य समाज से परिचित ही नहीं थे। आन्ध्र के प्रो. रंगा, बंगाल के क्रांतिकारी श्री चक्रवर्ती, केरल के श्री मन्नम, तमिलनाडु के श्री सत्यपूर्ति जी तो निःसंकोच ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द व आर्यसमाज का अपने जीवन पर प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रभाव स्वीकार करते रहे जब कि इन प्रदेशों में आर्य समाज का प्रभाव अधिक नहीं था। राजेन्द्र जी बताते हैं कि उत्तर प्रदेश में जन्में–पले मुंशी प्रेमचन्द जिनका कार्यक्षेत्र भी मुख्यरूप से उत्तर प्रदेश ही रहा, उनके जीवन को आर्य समाज से अप्रभावित चित्रित करना सत्य का गला घोंटने जैसी बात है। जिस महान् मनीषी प्रेमचन्द को आर्य समाज के अपने मासिक सदस्यता शुल्क की चिन्ता बनी रहती थी, उसे आर्य समाज से दूर करने का पाप किया जा रहा है। आगे जिज्ञासु जी लिखते हैं कि हाँ, एक शोधकर्त्ता जिसने प्रेमचन्द जी पर पी–पच. डी. किया है उसके शोध का विषय ही मुंशी प्रेमचन्द के साहित्य पर आर्य समाज का प्रभाव है परन्तु यह शोध प्रबन्ध अभी तक प्रकाशित ही नहीं हुआ।

प्रेमचन्द आधुनिक हिन्दी कहानी के पुरोधा हैं। हिन्दी कहानी ने उनसे सीखा कि साहित्य को समाज का हिस्सा कैसे बनाया जा सकता है। उनके साहित्यिक जीवन का आरंभ १६०१ से हो चुका था। उनकी पहली कहानी सरस्वती पत्रिका के दिसम्बर अंक में १६१५ में 'सौत' नाम से प्रकाशित हुई। और १६३६ में अंतिम कहानी कफन नाम से। दोनों ही कहानियों ने अपनी विषय वस्तु और भाषा की सहजता के कारण अपने तत्कालीन विमर्शों और विवादों को हमेशा प्रभावित किया है। 'कफन' ने तो दलित विमर्श को नया मोड़ ही दे दिया है। पहली और अंतिम कहानी के बीस वर्षों के इस अंतराल में उनकी कहानियों में भारतीय समाज के अनेक रंग देखने को मिलते हैं। उनसे पहले हिन्दी में काल्पनिक, एय्यारी और पौराणिक धार्मिक रचनाएं ही की जाती थीं। प्रेमचन्द ने हिन्दी में यथार्थवाद की शुरूआत की। प्रेमचन्द का कहना था कि साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। यह बात उनके साहित्य में उजागर हुई है।

प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य में परिचय के मुहताज कभी नहीं रहे। अपने आरंभिक लेखन से वह चर्तित और प्रभावशाली रहे। वे न केवल अपनी कहानियों के कारण बल्कि अपनी बोलचाल की भाषा के कारण भी जन–जन के प्रिय कथाकार बने हैं। आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रति नतमस्तक प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में नारी और जाति समस्या पर विशाल लेखन किया। प्रेमचन्द ने जिस समय अपने लेखन का आरंभ किया भारतीय समाज का रूप निरंतर बदल रहा था और सामाजिक प्रक्रियाएं व्यक्ति को प्रभावित कर रही थीं। साहित्य में भी परिस्थितियों के अनुसार बदलाव हो रहा था। उपन्यास एवं कहानियों के माध्यम से नारी चेतना एवं नारी स्वतंत्रता की बातें हो रही थीं। उस समय स्त्रियों की दशा अच्छी न थी। मध्यम व निम्न वर्ग की स्त्रियों को अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं थी और अपने अधिकारी से वंचित थीं। जमींदार, महाजन आदि परिवार की स्त्रियां घरेलू कार्यों तक सीमित थीं जबकि काश्तकार आदि वर्ग की स्त्रियां घरेलू कार्यो के साथ–साथ खेतों में भी काम करती थी। माध्यम वर्ग के परिवारों में नारी–शिक्षा को महत्व नहीं दिया जाता था। आर्य समाज ने नारी जीवन के मानसिक और सामाजिक विकास के लिए अनेकों काम किए। उन्हें घर से निकालकर शिक्षा से जोड़ने में भी आर्य समाज का योगदान भुलाया नहीं जा सकता है। आर्य समाज से गहरे जुड़े रहे प्रेमचन्द जी ने अपने साहित्य में नारी की दयनीय दशा का तो चित्रण किया ही बल्कि उन्हें अपनी पहचान बनाने के लिए प्रोत्साहित भी किया। प्रेमचन्द ने नारी समस्या को मुख्य विषय बनाया तथा अपने उपन्यास एवं कहानियों के माध्यम से नारी की दुर्दशा को उजागर किया जो हिन्दी साहित्य को दी हुई अपूर्व देन है। प्रेमचन्द ने कहा है–"नारी की उन्नति के बिना समाज का विकास संभव नहीं है, उसे समाज में पूरा आदर दिया जाना चाहिए, तभी समाज उन्नति करेगा।" प्रेमचन्द की नारी–भावना ने साहित्य में एक युगांतर प्रस्तुत किया है। प्रेमचन्द अतीत की ओर दृष्टिपात करते हुए सोचते हैं–"जब तक साहित्य का काम केवल मन बहलाव का सामान जुटाना, लोरियाँ गा–गा कर सुनाना, आंसू बहा कर जी हल्का करनी था, तब तक उसके लिए कर्म की आवश्यकता न थी। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा है, जिसमें उच्च चिंतन हो, जो हममें गति और बैचेनी पैदा करे, सुलाए नहीं क्योंकि सोना मृत्यु का लक्षण है।" (साहित्य का उद्देश्य–प्रेमचन्द) प्रेमचन्द ने नारी वर्ग की जिन समस्याओं पर प्रकाश डाला है वे अधिकांशतः मध्यम वर्ग की नारियों को अपनी ही समस्याएं हैं। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों व उपन्यासों सेवासदन, निर्मला, गोदान आदि के माध्यम से मध्यम वर्ग की दुविधा–भरी परिस्थिति का चित्रण किया है। मध्यम वर्ग की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि वह बौद्धिक विकास की दृष्टि से उच्च वर्ग के तुल्य होता है, किन्तु आर्थिक अभाव के कारण उसका जीवन विकसित नहीं हो पाता। परिणामतः वह असंतोष और घुटन का अनुभव करता रहता है। आर्थिक अभाव और मर्यादा–पालन से उत्पन्न अनेक प्रकार की कुरीतियों ने जिस रूप में इस वर्ग के नर–नारियों को संतप्त किया है, उसका वर्णन प्रेमचन्द के अधिकांश साहित्य में उपलब्ध हो जाता है। डा. गोविन्द त्रिगुणायत के अनुसार–'प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में दलित मानवता तथा स्त्रियां के प्रति सहानुभूति का भाव प्रदर्शित किया है, इनका आदर्शवाद इनकी ऐसीा सहानुभूति का परिणाम है।" (बहुवचन पत्रिका–डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत, पृष्ठ–२) प्रेमचन्द ने नारी को प्रेम शक्ति का विकास माना है। प्रेमचंद नारी के विकास में विवाह का बंधन मानते हैं। वे कहते हैं–नारी का जीवन विवाह के बाद बदल जाता है। वैवाहिक असंगतियाँ समाज में अनेक विकृतियाँ को पनपने का अवसर देती हैं। प्रेमचन्द स्त्री को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक होने को कहते हैं क्योंकि अधिकारहीन स्त्री के प्रति प्रेमचन्द पर्याप्त दयावान हैं। कानूनी अधिकारों के बिना पुरुष समाज उसे ठगता जाएगा। नारी के उत्थान में विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं ने जो–जो कार्य किए उसके लिए प्रेमचन्द हृदय से आभारी हैं, इन्होंने माना है–"मैं तो धन्यवाद देता हूँ दयानंद को, इन्होंने आर्य समाज का प्रचार करके स्त्रियाँ और समाज का बड़ा उद्धार किया है।" "प्रेमचन्द घर में, देवयानी, पृष्ठ–१३२) गोदान में संस्था "विमेंस लीग" में प्रो. मेहता से प्रेमचन्द ने जो भाषण दिलवाया है उसमें भी उन्होंने पुरूष से अधिक स्त्री शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया है, "नहीं कहता देवियों को विद्या की जरूरत नहीं है, पुरूषों से अधिक" (गोदान–प्रेमचन्द पृष्ठ–१६५)।

भारतीय समाज में नारी की स्थिति कभी सम्मान जनक और संतोष जनक नहीं रही। उसे मात्र घर की दीवारों तक सीमित कर दिया गया जबकि उसकी क्षमता कभी भी पुरुषों में कम नहीं रही। प्रेमचन्द ने समाज के विभिन्न वर्गों की स्त्रियों की प्रत्येक समस्या को अपने साहित्य का हिस्सा बनाया। उनके सम्पूर्ण का मूल्यांकन करें तो स्पष्ट हो जाएगा कि प्रेमचन्द का सम्पूर्ण साहित्य और वे आजीवन आर्य समाज के सिद्धांतों से प्रभावित रहे। आर्य समाज ने भारतीय जीवन को नई जीवन दृष्टि तो दी ही है साथ ही उसमें आ गयी विसंगति को दूर करने का भी प्रयास किया। आर्य समाज से जुड़े महापुरुषों का मूल्यांकन करें तो साफ पता चल जाता है कि आर्य समाज ने साहित्य और समाज को किस कदर

प्रभावित किया है। प्रेमचन्द की कहानियों उपन्यासों, नाटकों और लेखों में आर्य समाज के विचारों के प्रभावों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

आर्य समाज ने नारी सुधार के साथ जाति व्यवस्था पर भी करारा प्रहार किया। आर्य समाज के विस्तार और विशाल जन समुदाय को प्रभावित करने की क्षमता का कारण ही यही था कि उसकी पहली 'मान्यता' का विस्तार करना था। जिस समय में आर्य समाज ने सुधारवादी आंदोलन का आरंभ किया उस समय भारत तमाम तरह की सामाजिक विसंगतियों से गुजर रहा था। एक नए भारत की कल्पना जरूर की जा रही थी परन्तु अपने घर के अंग्रेजों से गुलाम होने की पीड़ा किसी को पता नहीं थी। आर्य समाज के चिंतकों और मनीषियों को यह पता था, लिहाजा सुधार करना आरंभ कर दिया। प्रेमचंद ने अपने सम्पूर्ण साहित्य में जाति–प्रथा का विरोध करते हुए दलितों और असहायों को मुख्य पात्र के रूप में प्रस्तुत कर उन्हें जो सम्मान दिया वह किसी अन्य से संभव नहीं हो सका। उन्होंने अपने कथा साहित्य में 'होरी, गोबर, भोला, झुनिया, सिलिया, सूरदास' जैसे हाशिये पर खड़े चरित्रों को मुख्यधारा में लाकर खड़ा कर दिया। कोई कुछ भी कहे चाहे विमर्शों के इस दौर में कोई उन पर विचारधाराओं के कितने भी आरोप लगाए पर दलितों और असहायों के प्रति यह निष्ठा और श्रद्धा प्रेमचन्द को आर्य समाज के संपर्क में ही रहकर मिले।

आर्य समाज ने हिन्दी साहित्य को जो सबसे बड़ा तोहफा दिया वह 'हिन्दी' के विस्तार का था। सभी जानते हैं कि हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए आर्य समाज ने किस तरह से जी तोड़ मेहनत की है। राजनीति के कुछ दांव–पेच के कारण हिन्दी राष्ट्र भाषा तो नहीं बन सकी लेकिन जनता की भाषा जरूर बन गई। आज जो हिन्दी करोड़ों लोगों द्वारा बोली जा रही है उसमें आर्य समाज की भूमिका को कम करके नहीं देखा जा सकता है। प्रेमचंद ने भी हिन्दी को जन–जन की भाषा बनाने में अपना पूरा जीवन खपा दिया। हिन्दी समाज जानता है कि हिन्दी को प्रेमचन्द ने एक ऐसी सरल भाषा के रूप में लोकप्रिय और चर्चित किया कि वह अवाम की जुबान बन गई। हिन्दी में लिखे गए प्रेमचंद द्वारा साहित्य को अहिंदी भाषियों ने तो पढ़ा ही देश–विदेश में भी अनुवाद द्वारा पढ़ी गई। हिन्दी के प्रति यह श्रद्धा बहुत हद तक प्रेमचंद को आर्य समाज से ही प्राप्त हुई क्योंकि उन्होंने अपने लेखन का आरम्भ उर्दू से किया था।

इस प्रकार प्रेमचंद के जीवन और साहित्य का मूल्यांकन किया जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि आर्य समाज ने अपनी मानवीय और संवेदनशील विचारधारा से अपने समय और समाज के तमाम मनीषियों और विद्वानों को प्रभावित किया। प्रेमचंद भी इससे अछूते नहीं रहे। आर्य समाज की मान्यताओं के प्रति प्रेमचंद के अटूट श्रद्धा थी, उनकी पत्नी ने उनके जीवन और साहित्य पर लिखे अपने संस्मरणों अनेक बार यह संकेत दिया है कि उनके घर में आर्य समाज के विद्वतजन हमेशा आते–जाते रहते थे। उनकी तस्वीरें भी प्रेमचंद जी के कमरे में लगी होती थीं। आर्य समाज द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएं तो प्रेमचन्द के जीवन का हिस्सा थीं।

शोक प्रस्ताव

यह कौन गया है आर्य जगत् से, हर आंख से आंसू बहने लगे
सब ओर उदासी फैल गई, अरमान दिलों के कहने लगे
इस आर्य परिवार की नदिया का मजबूत किनारा टूट गया।।

आर्य समाज नगरोटा बगवां के साप्ताहिक यज्ञ के उपरान्त सभी को सूचित किया गया कि आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्र.के पूर्व अध्यक्ष एवं दयानन्द मठ चम्बा के अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द जी का ५ अगस्त २०१५ को निधन हो गया। समाज ने एक प्रस्ताव पारित करके स्वामी जी की आर्य समाजों के प्रति योगदान से सभी को अवगत कराया गया। चम्बा मठ में जो कार्य किए उनके बारे भी सभी को अवगत कराया गया। उनकी पवित्र आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। उनके बताए हुए मार्ग पर चलने का प्रस्ताव भी पास हुआ। चम्बा मठ में जो कार्य अधूरे हैं उनको पूरा सहयोग देना तथा अधुरे कामों के करने का संकल्प भी लिया गया।

–मिलाप चन्द, आर्य समाज, नगरोटा

ओ३म्

जन्माष्टमी पर्व का आयोजन

आर्य समाज माल रोड़ सोलन में जन्माष्टमी का पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पुरोहित पवन कुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व में मंगल यज्ञ सम्पन्न किया गया। तत्पश्चात् दयानन्द आदर्श विद्यालय के छात्र अमन व छात्रा आस्था सूद ने योगीराज श्री कृष्ण चन्द जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला तथा विद्यालय के कुछ विद्यार्थियों द्वारा एक भजन भी गाया गया।

इस पूनीत अवसर पर आर्य जगत् के विद्वान् दिनेश्वर शास्त्री जी का ओजस्वी प्रवचन हुआ।

अंत में विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती उषा मित्तल जी ने मुख्य वेद प्रवक्ता दिनेश्वर शास्त्री जी तथा वहाँ आए सभी का धन्यवाद किया। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सकारात्मक दृष्टिकोण

♦सुधा सावन्त

कुछ भी बन–बस कायर मत बन।
ठोकर मार, पटक मत माथा, तेरी रोकते पाहन।।

यह कविता हमें सकारात्मक दृष्टिकोण रखने की प्रेरणा देती है। हमारे मार्ग में बाधाएँ तो हमेशा आती हैं पर हमें अपना सकारात्मक विचार नहीं छोड़ना चाहिये। कविता मन में जोश पैदा करती है। काम तो सभी करते हैं पर सोच अलग–अलग होती है। एक कहानी है, किसी गाँव में कोई यज्ञशाला बन रही थी। कई मजदूर काम कर रहे थे। पत्थर तोड़ रहे थे। एक पथिक उस मार्ग से जा रहा था उसने पूछा–क्या कर रहे हो भाई ? क्यां बना रहे हो ? मजदूर गुस्से में था। बोला देख नहीं रहे हो, पत्थर तोड़ रहा हूँ। कोई काम नहीं मिला। घर तो चलाना है, बच्चे हैं, पत्नी है, परिवार का पेट तो भरना है। सो तोड़ रहा हूँ पत्थर। पथिक ने सोचा यह जरा गुस्से में है, दूसरे से पूछता हूँ। उसने दूसरे मजदूर से पूछा क्या कर रहे हो भाई, दूसरे ने भी निराश स्वर में कहा, भाई पत्थर तोड़ रहा हूँ, गाँव में नया आया हूँ, कोई काम नहीं मिला। पैसा तो कमाना है। पथिक को लगा ये भी मजबूरी में काम कर रहा है।

उन्होंने एक बार फिर वही प्रश्न तीसरे मजदूर के सामने दोहराया। वह कुछ भजन भी गा रहा था बड़े उत्साह, से बोला, अरे आपको नहीं पता, हमारे गाँव में एक यज्ञशाला का निर्माण हो रहा है, प्रतिदिन हवन होगा, ईश्वर की कृपा होगी। हमें भी उनका आशीर्वाद मिलेगा। थोड़ा बहुत पैसा भी मिल जाता है, सो घर का खर्चा उससे चल जाता है। पथिक उत्तर सुनकर संतुष्ट हुआ।

यह घटना मैं अक्सर विद्यार्थियों को सुनाती हूँ और पूछती हूँ कि किस मजदूर का उत्तर उन्हें अच्छा लगा, तो सभी कहते हैं कि तीसरे मजदूर का। आपको भी ऐसा ही लगा होगा। यही है सकारात्मक दृष्टिकोण। वास्तव में काम तो सभी करते हैं, परन्तु जो काम करते हुए आनन्द का भी अनुभव करते हैं उसे बोझ समझकर नहीं करते वे स्वयं भी प्रसन्न रहते हैं, जीवन में सफल रहते हैं और दूसरों को भी प्रसन्नता प्रदान करते हैं। यही सकारात्मक दृष्टिकोण हमारी सफलता की पहली सीढ़ी है।

१. हमारे जीवन को संतुलित रूप में चलाने, सुचारू रूप से चलाने का प्रथम उपाय है–हम लक्ष्य निर्धारित करें और उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हर सम्भव उपाय करें। उसे हर रूप में परखें। विद्यार्थियों के लिए विद्या अध्ययन ही प्रथम कर्त्तव्य है और व्यवसाय अपनाना उनका लक्ष्य है। लक्ष्य को हर परिस्थिति में प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

२. मार्ग की बाधाओं से निराश न हों। कठिनाई तो हर काम में आती है। यही कठिनाईयाँ हमारी शक्ति को बढ़ाती हैं। आप अक्सर पहाड़ों पर देखते होंगे कि वहाँ के लोग पहाड़ पर सामान लेकर भी जल्दी चल पाते हैं। हम यात्री उतनी जल्दी नहीं चल पाते। कारण स्पष्ट है। पहाड़ के उबड़–खाबड़, ऊँचे–नीचे रास्तों ने और लगातार अभ्यास ने उनकी शारीरिक शक्ति को बढ़ा दिया है। इसी तरह काम करते समय कठिनाई हमारे संकल्प को और अधिक दृढ़ बनाएगी। हम अधिक परिश्रम से, अधिक मनोयोग से काम करेंगे ताकि अन्त में हमें सफलता मिले।

३. ध्यान की एकाग्रता के लिए हमें प्राणायाम, व्यायाम और संतुलित भोजन करना चाहिये। अधिक काम की वजह से कई बार हम समय पर भोजन नहीं करते या जल्दी–जल्दी कर लेते हैं। ऐसा न करें। आप जानते हैं कि काम चाहे कितना जरूरी हो पैट्रोल न डालें तो कार नहीं चलेगी। हमारा शरीर भी वैसा ही साधन है, जिसे समय पर संतुलित भोजन की आवश्यकता है।

४. समय प्रबन्धन की सफलता के लिए आवश्यक है कि हम समय तालिका बनाकर काम करें। कभी बहुत काम किया तो कभी कुछ नहीं–ऐसा न करें। और लगातार प्रयत्न करना चाहिए कि निर्धारित समय में काम पूरा हो जाए।

५. अपने मनोभावों को सन्तुलित एवं संयमित रखें। धर्म युद्ध के लिए अर्जुन को प्रेरित करते हुए योगेश्वर श्री कृष्ण ने यही कहा था कि दुःख या सुख में अपने को बहुत दुःखी या सुखी मत करो। इन विचारों से अपने को ऊपर रखो। साथ ही क्रोध को पास मत फटकने दो। क्रोध में बुद्धि का, विवेक शक्ति का नाश हो जाता है और उसके बाद तो पूर्ण विनाश ही हो जाता है।

६. रात को विश्राम करने से पूर्व अपने दिनभर के काम पर एक बार विचार अवश्य करो। कहाँ क्या कमी रह गयी है उस पर ध्यान दो और प्रयत्न करो कि अगले दिन उसे पूरा कर दो ताकि काम ठीक से आगे बढ़ता रहे।

७. सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए स्वाध्याय भी बहुत जरूरी है। महान् लोगों के जीवन के विषय में पढ़ें। हमें पता चलेगा कि सभी व्यक्ति कठिनाइयों और बाधाओं को पार करते हुए ही आगे बढ़ें हैं। लाल बहादुर शास्त्री जी का जीवन इसका ज्वलन्त उदाहरण है। उनका बचपन गरीबी में बीता। मुश्किल से पढ़ाई की। नदी पार करने के लिए नाविक को देने के लिए पैसा नहीं होता था। तो गंगा नदी तैर कर पार करते थे। कपड़े और

किताब अपने मित्रों को दे देते थे कि वो उन्हें उस पार दे सकें। स्वतन्त्रता संग्राम और असहयोग आंदोलन में गांधी जी का साथ दिया। स्वतन्त्र भारत में जवाहर लाल नेहरू के बाद देश के प्रधानमंत्री बने और १९६४ के भारत पाक युद्ध में न सिर्फ जय जवान–जय–किसान का नारा दिया बल्कि जीत भी दिलाई।

सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए इस वेदमन्त्र का अर्थ समझते हुए प्रतिदिन पाठ करें। मन्त्र इस प्रकार है तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदःशतं शृणुयाम शरदःशतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।। मन्त्र का अर्थ है : सर्वज्ञ ईश्वर ने हमें प्रकाशित करनेवाली, कल्याणकारी दिव्य शक्तियाँ ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ, मन, बुद्धि पहले ही प्रदान कर दी हैं। हमें उनका ठीक से उपयोग करना चाहिए। सौ वर्ष तक वेद आदि का ज्ञान सुनना चाहिए। उस ज्ञान को बोलकर उसका प्रचार–प्रसार करना चाहिए और दीनता का भाव मन में लाए बिना ही जीवन बिताना चाहिए। पूर्ण जीवन के लिए आवश्यक है सुनना और सुनाना। इसी से संस्कृति जीवित रहती है। हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वो अपनी उन्नति से संतुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझे।

आप यह मानकर चलें कि आप में वे सभी योग्यताएँ हैं जो किसी भी सफल व्यक्ति में हो सकती हैं। ईश्वर ने आपको सभी योग्यताओं से युक्त ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ दी हैं। मन, बुद्धि और विवेक दिया है। इनसे काम लें और जीवन को सफल बनाएँ।

आर्य समाज नगरोटा का श्रावणी पर्व एवं वार्षिक उत्सव

आर्य समाज नगरोटा बगवां का श्रावणी पर्व एवं वार्षिक उत्सव २५ अगस्त से २६ अगस्त २०१५ तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। वेद प्रचारक श्री यादविन्द्रे शर्मा (ऊधमपुर जे.एण्ड के.) तथा भजनोपदेशक श्री कुलदीप चन्द गुलेरिया जी व तबला वादक श्री चुनी लाल जी ने लोगों के मन को मोह लिया। पाँचों दिन अथर्ववेद परायण यज्ञ प्रातः ७.३० से ९.३० बजे तक चलता रहा जिसमें औषधियों तथा यज्ञ के लिए समिधाओं व हवन समग्री के बारे भी बताया गया श्री श्री राम काईस्था सपत्नी, श्रीमती सुदेश, श्रीमती कमलेश नागपाल श्री आशीष भटनागर सपत्नी, श्री दीपक काईस्था सपत्नी यजमान बने।

श्रावणी पर्व पर पुराने यज्ञोपवीत उतार का नए यज्ञोपवीत डाले गए। श्रावणी पर श्री वेद भूषण गुप्ता जी द्वारा वेद प्रचारक की पुस्तकें बांटी गई। पाँचों दिन शाम ३.३० बजे से ५.३० बजे तक वेद कथा चलती रही।

इस शुभ पर्व पर नव ब्रह्मचारियों श्री कार्तिक भटनागर सुपुत्र श्री आशीष भटनागर तथा श्री सात्विक भटनागर सुपुत्र स्व. श्री अकुंश को यज्ञोपवीत डाले गए। ब्रह्म के आदेशों के अनुसार भिक्षा भी मंगवाई गई। पीले वस्त्रों में यज्ञ में बैठे दोनों ब्रह्मचारियों को यज्ञोपवीत के बारे बताया गया और संकल्प कराया गया कि इस यज्ञोपवीत को सदैव पहने रखना है।

बाहर से आए सदस्यों तथा नगरोटा बगवां में सभी सदस्यों का सहयोग तथा आर्य समाज के प्रति लग्न के लिए धन्यवाद किया। शांति पाठ के उपरान्त कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

–मिलाप चन्द
आर्य समाज, नगरोटा बगवां

''दयानंद मठ घण्डरां में स्वाध्याय एवं साधना शिविर''

सन्त शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द जी महाराज द्वारा स्थापित ''दयानंद मठ घण्डरां, तह. इंदौरा, जिला कांगड़ा (हि.प्र.) में स्वाध्याय एवं साधना शिविर पूज्य स्वामी सदानन्द जी महाराज के आदेशानुसार, आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के महामन्त्री आचार्य श्री रामफल सिंह आर्य जी की अध्यक्षता में दिनांक १३ अक्तूबर से १८ अक्तूबर २०१५ तक लगाया जा रहा है। इस शिविर में आर्य समाज के आधार भूत सिद्धांतों का ज्ञान, ऋषिकृत ग्रंथों का स्वाध्याय एवं साधना का प्रशिक्षण दिया जायेगा। शिविर में स्थान बहुत सीमित हैं अतः आने वाले सज्जन अपना स्थान अति शीघ्र आरक्षित करवायें। दिनांक १३ अक्तूबर २०१५ की सांयकाल तक शिविर में पहुंचना अनिवार्य होगा। आगन्तुक अपने साथ कापी, पैन, ओढ़ने के लिये हल्का कम्बल, टार्च, एक बैडशीट, तकिया कवर लेकर आयेंगे तो सुविधा रहेगी। भोजन की व्यवस्था मठ में ही होगी। शिविर पूर्णतः निःशुल्क है, परन्तु जो लोग स्वेच्छा से जो भी दान देना चाहेंगे, स्वीकार्य होगा। कृपया अधिक वृद्ध, रोगी एवं छोटे बच्चे, उच्छृंखल और अनुशासनहीन व्यक्ति क्षमा करें। युवकों की आयु १८–२० वर्ष से ऊपर की होनी चाहिये। केवल अनुशासनप्रिय, शिष्ट, सभ्य एवं स्वाध्यायशील व्यक्ति ही सम्पर्क करें। शिविर की दिनचर्या अध्यक्ष की आज्ञानुसार रहेगी। आने से पूर्व दूरभाष द्वारा सूचना देना अति आवश्यक है।

सम्पर्क सूत्र :–

स्वामी संतोषानंद
मो. : ०९४१८२–७०८२५

रामफल सिंह आर्य
मो. : ०९४१८४–७७७१४,
०९४१८२–७७७१४

सीख

♦आचार्य सोमदेव

महाभारत के वन पर्व में प्रसिद्ध यक्ष–युधिष्ठिर संवाद है, जिसमें यक्ष धर्मराज युधिष्ठिर से प्रेश्न पूछता है और युधिष्ठिर स्थिर बुद्धि से इसका उत्तर देते हैं। जो इस प्रकार हैं :–

यक्ष–हे युधिष्ठिर! किसको मारकर व्यक्ति सबका प्रिय बन सकता है?

युधिष्ठर–अहंकार को मारकर व्यक्ति सबका प्रिय बन सकता है।

यक्ष–किसको मारकर व्यक्ति शोक नहीं करता है ?

युधिष्ठिर–क्रोध को मारकर व्यक्ति शोक नहीं करता है।

यक्ष–किसको मारकर व्यक्ति धनी हो सकता है ?

युधिष्ठिर–काम को मारकर व्यक्ति धनी हो सकता है।

यक्ष–किसको मारकर व्यक्ति सुखी हो सकता है ?

युधिष्ठिर–लोभ को मारकर व्यक्ति सुखी हो सकता है।

पुनः इन प्रश्नोत्तरों की विस्तृत व्याख्या करते हुए आपने बताया कि वस्तुतः 'अहंकार' को मारकर ही व्यक्ति सबका प्रिय हो सकता है। संसार में व्यक्तियों को भिन्न–भिन्न प्रकार का अहंकार होता है–जैसे सम्पत्ति का अभिमान, पद का, विद्या का, कुल का, धार्मिकता का, दानशीलता का अभिमान आदि–आदि व्यक्ति जब तक अपने व्यक्तित्व को अभिमान से सीमित रखता है तो उसमें व अन्यों में संघर्ष चलता रहता है, लेकिन जब वह अभिमान का त्याग कर देता है तो वह सबका हो जाता है। महाकवि माद्य का उदाहरण देते हुए आपने बताया कि महाकवि माघ थे तो संस्कृत के उच्च श्रेणी के कवि लेकिन इन्हें अपनी विद्या का अभिमान था। एक बार महाकवि जब अपने आश्रयदाता राजा के साथ जंगल में घूम रहे थे तो रास्ता भटक गए, काफी दूर चलने पर एक कुटिया दिखाई दी, समीप जाकर देखा तो वहाँ एक बूढ़ी माता झाड़ू लगा रही थी। अपने अभिमान में माघ ने पूछा–हे बूढ़िया! ये रास्ता कहाँ जाता है? बूढ़ी माता ने उनको अच्छी तरह से देखा फिर बोली–मूर्ख! रास्ता कहीं नहीं जाता। रास्ते पर तो राहगीर जाते हैं। बूढ़ी माता के इस अप्रत्याक्षित उत्तर को सुनकर माघ तिलमिला गए। लेकिन जंगल में भटकते हुए बहुत देर हो चुकी थी, अतः फिर पूछा–अच्छा हम राहगीर हैं, अब बता दो कि ये रास्ता कहाँ जाता है ? बूढ़ी बोली–राहगीर तो दो होते हैं–सूर्य और चन्द्रमा, तुम इनमें से कौन हो ? माघ को इस उत्तर की कल्पना नहीं थी। माघ के साथ में राजा है जिनके सामने बड़े–बड़े कवि आपकी विद्वत्ता का लोहा मान चुके थे और यहाँ क्या, यहाँ एक बूढ़ी माता महाकवि माघ के वाक्यों में ही प्रश्न चिन्ह लगा रही थी। जंगल में और भटकना नहीं चाहते थे, उन्होंने धैर्य रखकर पूछा–अच्छा माई! हम राजा के आदमी हैं, अब बता दो ये रास्ता कहाँ जाता है। बूढ़ी बोली–राजा तो दो हाते हैं–इन्द्र और यम। तु किस राजा के आदमी हो ? माघ बोले–हम क्षमा करने वाले हैं। बूढ़ी बोली–क्षमा तो पृथ्वी और नारी ही करती है, तुम इनमें से कौन हो ? माघ बोले–हम क्षणभंगुर हैं। बूढ़ी बोली–क्षणभंगुर तो दो होते हैं–सम्पत्ति और युवावस्था, तुम इनमें से कौन हो ? बूढ़ी माता के उत्तर से निरुत्तर होते माघ समझ ही नहीं पा रहे थे कि क्या उत्तर दिया जाए अन्त में बोले–हम हारने वाले हैं। बूढ़ी बोली–हारते तो दो ही तरह के व्यक्ति हैं एक वो जिसका चरित्र चला जाता है या वो जो किसी का ऋणी हो जाता है, तुम्हारा क्या गया क्या चरित्र गया या तुम किसी के ऋणी हो ? माघ बूढ़ी माता के चरणों में गिर गए, बोले–माई तू कौन है ? बूढ़ी माता बोली–महाकवि माघ! उठो। माघ को इस प्रकार अपना नाम सुनकर आश्चर्य हुआ, उन्होंने पूछा–माई तुम हमें जानती हो। बूढ़ी बोली–हाँ महाकवि में तुम्हें देखते ही पहचान गई थी और मैं तुम्हारे अहंकार के बारे में भी जानती हूँ। माघ अभी तुम कुछ लोगों के ही प्रिय हो, लेकिन जब तुम अपना अभिमान छोड़ दोगे तो सबके प्रिय हो जाओगे।

शोक समाचार

♦आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के महामन्त्री श्री रामफल सिंह आर्य की बड़ी बहन ६३ वर्षीय श्रीमती शीला देवी का अचानक ही अपने खेतों में काम करते हुए ह्रदय गति रूक जाने से देहांत हो गया। वे अति मृदु भाषी, समाज सेविका थीं। श्री रामफल आर्य जी की वे इकलौती बहन थी। दोनों भाई बहन में अत्यधिक लगाव था। उनके अचानक दिवंगत हो जाने से उनके सम्बन्धियों में रिक्तता आई है जिसकी निकट भविष्य में भरपाई कर पाना असंभव है। वे अपने पीछे पति होशियार सिंह एवं तीन बेटे और दो बेटियों को छोड़ गई हैं। आर्य वन्दना परिवार श्री रामफल सिंह आर्य, सभा महामंत्री तथा उनके समस्त बन्धु बान्धवों को इस महान् दुःख को सहने की शक्ति और साहस प्रदान करने की तथा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना करता है।

♦मेरे एक परम मित्र गुड़गांव निवासी श्री सतपाल जी की धर्म पत्नी का देहांत हो गया है। इस वृद्धावस्था में अपनी धर्मपत्नी के विदा होने पर उन्हें कितनी कमी हुई हो अनुमान लगाया जा सकता है। श्री सतपाल जी की धर्मपत्नी बहुत ही मिलनसार, मृदुभाषी और कदम–कदम पर सतपाल जी का सहयोग देती थी उनके दिवंगत हो जाने से श्री सतपाल जी को कितनी क्षति हुई है, यह अनुमान लगाना कठिन है। आर्य वन्दना परिवार दिवंगत आत्मा की शांति और सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है।

–सम्पादक

आँख खुल गई

♦महात्मा आनन्द स्वामी

एक दिन भगवान कृष्ण के पास नारद जी आये; बोले ''भगवन्! मैं ब्रह्मज्ञान की बात पूछने आया हूँ, क्या है यह ब्रह्मज्ञान ? क्यों हम ब्रह्म का दर्शन नहीं कर पाते ?'' श्री कृष्ण ने कहा, ''अभी आए हो, थोड़ी देर बैठो, प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा।'' नारद जी बैठे, विश्राम किया, बोले, ''अब दो मेरे प्रश्न का उत्तर।'' श्री कृष्ण जी ने कहा, ''आओ जंगल में घूमने चलें, वहाँ बातें करेंगे।'' दोनों निकल पड़े सैर को। घूमते–घूमते नारद काफी थक गए। प्यास भी सताने लगी। श्री कृष्ण ने मुस्कराते हुए कहा, ''नारद जी! आपको शायद प्यास लगी है, मुझे भी लगी है। मैं यहाँ बैठता हूँ, आप कहीं से देखकर थोड़ा पानी ले आइये।'' नारद बोले, ''आप बैठिये, मैं पानी लेकर अभी आता हूँ।'' आगे गए तो एक कुआँ मिला, जिसपर कुछ स्त्रियाँ पानी भर रही थीं। मांगा। एक युवती ने अपने घड़े से पानी पिला दिया। नारद पानी पी रहे थे और उसकी ओर देख रहे थे। देखते–देखते मन में मोह जाग उठा। पानी पी लिया तो एक ओर खड़े हो गए।

वह लड़की घड़े को लेकर अपने घर को चली तो नारद भी उसके पीछे–पीछे चल पड़े। उसके घर में पहुँचे तो लड़की के पिता ने उन्हें पहचानकर कहा, ''आप नारद जी! मेरे सौभाग्य से आपके दर्शन हुए। अब भोजन किये बिना जाने न दूँगा।'' नारद जी यही तो चाहते थे; बोले, ''भूख तो लगी है।'' भोजन कर चुके तो बोले, ''हम कुछ दिन तुम्हारे घर में रहें तो क्या हो ?लड़की के पिता ने कहा, ''यह तो मेरा सौभाग्य है।'' नारद जी वहीं टिक गए। उस लड़की के रूप का मोह उन्हें पागल किये देता था। मन में जो गिरावट आ गई थी, वह और भी नीचे लिये जाती थी। फिर एक दिन लड़की के पिता से बोले, मैं चाहता हूँ कि इस कन्या की शादी हो जाये।'' लड़की के पिता ने कहा, ''महाराज! कन्या तो पराया धन है, मुझे उसका विवाह तो करना ही है। आपसे अच्छा वर उसे कहाँ मिलेगा ?मैं विवाह कर दूंगा अवश्य, परन्तु मेरी एक शर्त भी माननी होगी और शर्त यह है कि विवाह के पश्चात् आप मेरे घर पर रहें, कहीं जाएँ नहीं।''

नारद को और क्या चाहिए था! रमते राम का कोई घर–घाट था नहीं। चिंता कर रहे थे कि पत्नी को लेकर कहाँ जाएँगे। अब बना–बनाया घर मिल गया। शर्त स्वीकार हो गई। विवाह भी हो गया। नारद जी अपने–आपको भूलकर ससुरालवालों के पशु चराते, उनके खेतों में काम करते, उन्हीं के घर में रहने लगे। इस प्रकार कितने ही वर्ष व्यतीत हो गये। गृहस्थी नारद के दो–तीन बच्चे भी हो गए। तभी एक दिन मूसलाधार वर्षा होने लगी। एक दिन, दो दिन, कई दिन होती रही। सब ओर जल–थल एक हो गया। शेष लोग कहाँ–कहाँ पर बचे, यह नारद ने देखा नहीं। वे अपनी पत्नी और बच्चों को लेकर मकान की दूसरी मंजिल में चले गए। वहाँ भी पानी पहुँचा तो छत पर चले गए, परन्तु बाढ़ तो रुकी नहीं। पानी छत के निकट पहुँचा तो नारद ने समझा कि मकान अब बचेगा नहीं। पत्नी और बच्चों सहित पानी में कूद पड़े कि किसी ऊँचे स्थान पर जाकर प्राण बचायें। परन्तु ऐसा करते ही दो बच्चे डूब गये। पत्नी रोने लगी तो नारद बोले, ''भगवान! रोती क्यों है ?तू भी है, मैं भी हूँ। बच्चे और हो जायेंगे।'' परन्तु तभी तीसरा बच्चा भी डूब गया। उसे ढूंढने के लिए नारद जी हाथ–पाँव मार ही रहे थे कि पानी का रेला आया, पत्नी भी डूब गई। बड़ी कठिनाई से नारद जी एक ऊँचे स्थान पर पहुँचे। वहाँ भी पानी था। थक वह बहुत गये थे। तैरने का अब प्रश्न उत्पन्न नहीं होता था, परन्तु धन्यवाद किया कि खड़े हो सकते हैं। पानी छाती तक था; तभी पानी ऊपर बढ़ा, कन्धों तक पहुँच गया, फिर ग्रीवा तक, ठोड़ी भी डूब गई। पानी होठों के पास पहुँचा तो नारद जी चिल्ला उठे, ''हे भगवान्, मुझे बचाओ!'' तभी याद आया कि वे तो भगवान् कृष्ण के लिए पानी लेने आये थे। रोकर बोले, ''क्षमा करो भगवन्!'' और तब कहानी है कि आँख खुल गई। नारद ने देखा कि कहीं कुछ भी नहीं। वे जंगल में पड़े हैं, सामने खड़े श्री कृष्ण मुस्करा रहे हैं; मुस्कराते हुए उन्होंने कहा, ''नारद जी! आपके प्रश्न का उत्तर मिल गया या नहीं ?'' प्रकृति की वास्तविकता को समझकर इससे छुटकारा पा लेना ही ब्रह्मज्ञान है। इससे मुक्ति पाये बिना ब्रह्म–दर्शन नहीं होता। परन्तु यहाँ प्रकृति–माया इतनी लुभानेवाली है कि इसके जाल में फंसा व्यक्ति तभी समझता है जब पानी नाक तक आ जाता है।

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

बुक पोस्ट

सेवा में

अग्निहोत्र का वैज्ञानिक महत्व

•प्रो. डी. के. माहेश्वरी

विश्व की प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है। वह कभी भी सदा के लिए एकरस या एकरूप में नहीं रह सकती। अग्नि, जल और वनस्पतियों के संयोग के बिना नाना अविष्कारों की वाष्प का प्रादुर्भाव नहीं हो सकता। शरीर को स्वस्थ और निरोगी बनाने के लिये जहाँ अन्य उत्तम आहार आदि साधन हैं, वहाँ यज्ञ ही एक मुख्य साधन है। वैदिक अग्निहोत्र एक प्राचीन विज्ञान है। हम जैविक पदार्थों से तैयार हुई अग्नि और वेद मंत्रों से वातावरण को परिवर्तित कर सकते हैं। अग्निहोत्र के माध्यम से हम नकारात्मक ऊर्जा को सकारात्मक ऊर्जा में परिवर्तित कर सकते हैं। यज्ञ का भौतिक विज्ञान भी है। वायु शोधन की दुर्गन्ध को सुगन्ध से दमन करने की यह प्रक्रिया मनुष्य की सबसे बड़ी खुराक, प्राणवायु के परिशोधन में महत्त्वपूर्ण योगदान करती है। आज जब वायु प्रदूषण की समस्या विश्व संकट का रूप धारण करती जा रही है, तो परिशोधन के प्रमुख अस्त्र यज्ञोपचार को पुनः प्रखर बनाना होगा। रोगकारक कीटाणुओं को यज्ञाग्नि द्वारा नष्ट करने के लिए अथर्ववेद में अनेक उपाय बताये गये हैं। रोग कीटाणुओं को मारने की जितनी शक्ति यज्ञ ऊर्जा में है, उतनी सरल, व्यापक और सस्ती पद्धति अभी तक नहीं खोजी जा सकी है। शारीरिक और मानसिक व्याधियों के खोये हुए पृष्ठ यदि प्राचीनतम यज्ञ पद्धति में फिर से ढूंढ़े जा सकें तो ऐसे सत्परिणामों की पूरी–पूरी सम्भावना है कि शारीरिक ही नहीं, मानसिक रोगों का भी सफल उपचार किया जा सकता है। चिकित्सा पद्धतियों में यज्ञ चिकित्सा को इसलिए वरीयता मिल सकती है, क्योंकि औषधियों को सूक्ष्मतम वायुभूत बनाकर शरीर में अत्यन्त सरलता से पहुँचाया जा सकता है। वेदों में अनेकत्र प्रार्थना की गयी है कि आयु नैरोग्य आदि यज्ञ से सिद्ध हों–आयुर्यज्ञेन कल्पताम् प्राणो यज्ञेन कल्पताम्। आज यज्ञ चिकित्सा विषय में अनेक पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं, बस आवश्यकता है तो उनके प्रचार–प्रसार की।

७५०० ई.पू. से ही ऋषि–मुनि वातावरण को शुद्ध करने के लिए अग्निहोत्र–यज्ञ किया करते थे। यज्ञ भारतीय संस्कृति के मनीषी ऋषिगणों द्वारा सारी वसुन्धरा को दी गयी ऐसी महत्त्वपूर्ण देन है, जिसे सर्वाधिक फलदायी एवं समग्र पर्यावरण केन्द्र के ठीक बने रहने का आधार माना जा सकता है। यज्ञ परमार्थ प्रयोजन के लिए किया गया एक उच्चस्तरीय पुरुषार्थ है। इस संदर्भ में महर्षि याज्ञवल्क्य के शतपथ ब्रह्मण का वचन स्मरणीय है–'नो हेवा स्वग्यो एषा यदग्निहोत्रम्'–अर्थात् यज्ञ समस्त स्वर्गीय सुखों का साधन है, अतः सम्पूर्ण मानवता को सुख, समृद्धि प्राप्ति के लिए इस यज्ञ रूपी नाव पर आरुढ़ होना चाहिए। ऋग्वेद के अनुसार, यज्ञ में हवन सामग्री को अग्नि में अर्पित करके वैदिक मन्त्रों का उच्चारण किया जाता है।

साभार

श्री मनसा राम, गांव देरड़ू, डा. कपाही, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी ने ₹ २००, श्री कांशी राम गुलेरिया, पूर्व प्रधानाचार्य गाँव भगवानपुर, तह. चच्योट, जिला मण्डी ₹ २००, श्री प्रदीप कुमार, बनायक, डा. भोजपुर, सुन्दरनगर, जिला मण्डी ₹ १०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200
आप शुल्क हि. प्र. स्टेट को–आपरेटिव बैंक लिमिटेड, सुन्दरनगर शाखा (खाता संख्या : 32510115356 आर्य वन्दना) में भी जमा करवा सकते हैं।